क्र0सं........ सं.2012

भ्रष्टाचार शिरोमणि अवार्ड

श्री/श्रीमती/कुमार/कुमारी..

को 15 **जून** 2011 को आयोजित **भ्रष्टाचार मेला** में भारत के अन्दर भ्रष्टाचार करने/बढ़ाने अथवा बढ़ाने में सरकार/जनता की मदद करने में किये गये उत्कृष्ट योगदान के लिए **'भ्रष्टाचार शिरोमणि अवार्ड**–2011 से अनादर सहित सम्मानित किया जाता है।

ब्रह्माडाध्यक्ष भारताध्यक्ष

अगर आप भ्रष्ट है या भ्रष्टाचार को बढ़ाने में सरकार/जनता की मदद कर रहे हैं तो आपको 15 जून 2011 को 'भ्रष्टाचार निवारण दिवस' के रुप में मनाये जा डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के जन्म दिवस के अवसर पर **'भ्रष्टाचार शिरोमणि अवार्ड** से सम्मानित किया जाएगा.

योग्यताः इसमें भ्रष्टाचारी, भ्रष्टाचार फैलाने में मदद करने वाले व्यक्ति को भ्रष्टाचार के लिए ली गयी रकम, या फैलाने में दी गयी रकम का प्रमाणिक विवरण भेजना होगा

अवार्ड :

- भ्रष्टाचारी को भ्रष्टाचार की रकम की दोगुनी रकम
- एक सोना/चांदी/कास्य का बना हुआ कटोरा स्मृति चिन्ह के रुप में,
- फटा हुआ अंगवस्त्रम
- भ्रष्टाचार फैलाने के 10 टिप्स प्रदान किए जाएंगे।

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

दाउजी

sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष:१० अंक:०८ मई २०११, इलाहाबाद

संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी.—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु0 १०/—
वार्षिकः रु0 ११०/—
पॉच वर्ष—रु0 ५००/—
आजीवन सदस्यः रु0 ११००/—
संरक्षक सदस्य : रु0 ५०००/—

अंदर पढ़िए

मुद्दा

आरक्षण बनाम जातिविग्रह.. ? ०७

१० युवा वर्ग और हिंदी

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय में चल रहा खुलेआम भ्रष्टाचार का नंगा नाच 11

१२ मीडिया का अंडरवल्ड

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग	०५
अपनी बात	०६
यादें	१५
महिला रचनाकार :	
कहानीः अपाहिज विमला बुलंदियों के शिख पर	१६
कहानीः अनूठा अभियान	२६
समाज : नारी का अपमान.....	२४
आध्यात्म	२०
स्नेह बाल मंच	२२
समाज	२४
युवा रचनाकार	२६
कविताएं-	२७,२८
अहिन्दी भाषी रचनाकार-कहानी : गर्दन	१८
साहित्य समाचार-	११,१५,२१,२३, २७,२६, ३०,३२
पाठकों की पाती	३२
पुस्तक समीक्षा-	३३

प्रेरक प्रसंग

प्रतिक्षा में

भगवान बुद्ध को प्यास लगी थी. शिष्य आनंद पास के पहाड़ी झरने से पानी लेने गये. उन्होंने देखा कि झरने से अभी-अभी बैलगाड़िया गुजरी है और जल गन्दला हो गया है. वे वापस लौट आए और बुद्ध से बोले मैं पीछे छूट गई नदी पर जल लेने जाता हूं. इस झरने का पानी बैलगाड़ियों के कारण गंदला हो गया है. किन्तु भगवान बुद्ध ने आनन्द को वापस उसी झरने पर भेजा. तब भी पानी साफ नहीं हुआ था. आनन्द वापस लौट आए. ऐसा तीन बार हुआ चौथी बार जाने पर आनन्द हैरान रह गये मिट्टी व सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ गये थे. वे पानी आइने की भांति चमक रहा था. वे पानी लेकर लौट आए.

भगवान बुद्ध बोले-आनन्द हमारे जीवन के जल को भी बुरे विचारों की बैलगाड़ियों रोज-रोज गंदला कर देती है और हम बुरे काम करने को तत्पर हो जाते है. यदि हम मन की झील के शान्त होने की थोड़ी सी प्रतीक्षा कर ले तो सब कुछ स्वच्छ हो जाता है. उसी झरने की तरह. **भैरुलाल नामा,** राजस्थान

++++++++++++++++++++++++++++++

०१ सब प्यार के प्यासे होते हैं, किसी की प्यास मिट जाती है, किसी की नहीं मिट पाती है. हम चाहते हैं दुनियां हमें प्यार करें; किन्तु हम स्वयूम दुनिया को कितना प्यार करते हैं?

०२ इस संसार में जहॉ प्यार पाताल की गहराई तक भरा है, वहॉ मानव प्यासा ही रहता है. मृग तृष्णा न जाने कितने मानवों को नैराश्य, आत्मग्लानि, दुःख एवम् चिन्ता में भरमाती रहती है. अन्त तक मानव प्यार की खोज में भटकता रहता है; किन्तु सुखी है वह जिसे यह अगाध प्यार मिल जाता है.

०३ मानव आशा पर जीता रहता है, यदि इसका प्रादुर्भाव जीवन में न होता तो इस संसार की क्या गति होती? इसकी कल्पना कर सकना सम्भव नहीं.

दाऊजी

अदाब अर्ज है

बे-शर्मो तुम ही जनक, माओ-आओ वाद।
गुण्डे सांसद राजगुरु, करें देश बर्बाद।।
++++++++++++++++++++++++
सांसद नहिं सांसद रहे, ये सासत के मूल।
मथ-मत-दाता राजगुरु, कर मत ऐसी भूल।।
++++++++++++++++++++++++
अफजल गुरु कसाव है, सुख-सुविधा सरबोर।
राजगुरु तुम कुछ कहो, तो फांसी की डेर।।
++++++++++++++++++++++++
पाक भला कब पाक था, तुझको समझे पाक।
ध्येय हमेशा नाक दम, राजगुरु कर खाक।।
++++++++++++++++++++++++
लाल बहादुर ताकते थे, जहं दिवस पगार।
राजगुरु उस देश उफ, ऐसा भ्रष्टाचार।।
++++++++++++++++++++++++
मात-पिता, दीनन-दुखी, जो नहिं अनुभे ईश।
राजगुरु वह नहिं मिले, कोटिक पटको शीश।।

आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर राजगुरु, जबलपुर, म.प्र.

मन में बसता मैल है, शब्दों में श्रृंगार।
कत्सित करता रुप को, मन का यही विकार।
++++++++++++++++++++++++++++
होठों पर तो राम है, रखते बगल कटार।
ऐसे मानव का भला, कैसे हो उद्धार।।
++++++++++++++++++++++++++++
ना गुलाल ना इत्र है, गीला श्वेद रुमाल।
प्रियतम की इस गंध से, रहते हैं खुशहाल।।
++++++++++++++++++++++++++++
संस्कार सब खो गये, बेढंगी है चाल।
फूहड़ नकले कर रहे, ओढ़ विदेशी खाल।
++++++++++++++++++++++++++++
अलग अलग ये राह है, मंजिल लेकिन एक।
जन्म जन्म से ढूंढता, मिलते रहे अनेक।
++++++++++++++++++++++++++++
फल पाना अधिकार है, कर्मो के अनुरुप।
ईश्वर ही हस्ती नहीं, बदले सत्य स्वरुप।।

कृष्ण स्वरुप शर्मा 'मैथिलेन्द्र', नर्मदापुरम, म.प्र.

अपनी बात

भारत में पाकिस्तान क्यों?

हमारे देश का क्या हाल है, क्या हो सकता है, कहां तक हो सकता है? इसकी कोई सीमा नहीं है. अगर सीधे व सरल शब्दों में कहे तो यहां कुछ भी असंभव नहीं है. इसके पीछे मात्र दों ही कारण है पहला वोट बैंक, दूसरा पैसा. इन दोनों के लिए इंसान अपने आपको छोड़कर कुछ भी करने को तैयार हो सकता है. इसके लिए कोई कानून, न्याय, नही हैं. अभी हाल ही में दक्षिण एशिया में चल रहे क्रिकेट के बुखार से भारत की लगभग सत्तर प्रतिशत जनता तपती नजर आ रही थी. इस बुखार का असली जोर, रोमांच भारत-पाकिस्तान के बीच ३० मार्च २०११ को होने वाले सेमीफाइनल के दिन था. जहां देखों वहीं लोग टीवी से चिपके खड़े थे. सड़कों पर भी दुकानदार अपनी-अपनी पान, जनरल स्टोर की दुकानों पर टीवी. लगाये रक्खें थे. अधिकांश जनता तो घरों के अंदर टीवी के सन्निकट समाहित थी. लेकिन बचे-खुचे लोग आते-जाते दुकानों पर रुककर मैंच का स्कोर पूछ लिया करते या देख लिया कर रहे थे. मैंच का रोमांच, उत्साह जनता के बीच देखते ही बन रहा था. जब भारत खेल रहा था तो प्रत्येक चौके, छक्के और शानदार शाट होने पर, किसी खिलाड़ी के आउट होने से बचने पर, खासकर सचिन के करीब ५ या ६ बार जीवनदान मिलने पर पटाखे फूट रहे थे, और जब पाकिस्तान खेल रहा था तो उसके प्रत्येक विकेट गिरने पर पटाखें फुट रहे थे. लेकिन ठीक इसके विपरीत अपने भारत में ही कुछ इलाके, या कुछ खास समुदाय के कुछ लोग ऐसे भी थे, जो जब पाकिस्तान खेल रहा था तो प्रत्येक चौके, छक्के और शानदार शाट होने पर, किसी खिलाड़ी के आउट होने से बचने पर, जीवनदान मिलने पर पटाखे फोड़ रहे थे. खेल भावना की दृष्टि से देखा जाय तो चाहे कोई भी देश खेले, अच्छे खेल पर तालियां, चौको-छक्कों पर अपने-अपने तरह से खुशी का इजहार करना अच्छी बात है. लेकिन ऐसा सभी देशों के साथ होना चाहिए. मगर जब देश हित की बात आती है तो यह जरुरी है कि हम अपने देश की टीम के साथ खड़े नजर आये न कि पड़ोसी देश की टीम के साथ. हमारे देश में अक्सर ऐसा ही होता है. जब भी भारत-पाकिस्तान का मैंच होता है हमारे देश की कुछ खास समुदाय लोग भारत के साथ नहीं पाकिस्तान के साथ खड़े नज़र आते है. पाकिस्तानी खिलाड़ियों द्वारा चौकों, छक्कों के मारे जाने, विकेट लिये जाने पर पटाखे फोड़े जाते है, और पाकिस्तान के खिलाड़ियों के आउट होने पर ग़म का इज़हार किया जाता है. जब भारत के विकेट गिरने पर खुशी जाहिर की जाती है. मिश्रित बस्तियों में तो ऐसा लगता है मानों भारत-पाकिस्तान में मैंच नहीं खेला जा रहा हो बल्कि युद्ध हो रहा हो. अगर थोड़ी सी बात बढ़ी, या किसी समुदाय के लोग कमजोर पड़े तो दंगे, झगड़े होने की पूरी सम्भावना दिखती नज़र आती है. आखिर ऐसा क्यों. अगर भारत जीत गया तो ये खास समुदाय के लोग घरों में कैद हो जाते हैं, और जीत से मिली खुशी का इजहार, उन्हें मातम में पड़ोसी की खुशी लगती है. मानों ये पटाखें उन्हें चुभ रहे हों, चिढ़ा रहे हों. आखिर क्यों? सुविधायें लेने के लिए, मांगने के लिए हम भारतीय है, अल्पसंख्यक है. हम यह सुविधा चाहिए लेकिन जब भारत के साथ फर्ज़ निभाना हो तो पाकिस्तानी क्यों बनते हैं. अमेरिका द्वारा इराक पर बम फोड़े जाने पर हम विरोध भारत में जताते है, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में आतंकी वारदातें होने पर विरोध जताये जाते हैं, जुलूस निकाले जाते है और भारत में आतंकी हमला होने पर शांति मारे बैठे रहते है, मानों भारत की किसी भी गतिविधि से कोई सरोकार ही नहीं हो. केवल यह सुविधा प्रदाता देश है. ऐसा आखिर क्यों? ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक हमारे देश में वोट की राजनीति चलती रहेगी. प्रत्येक मैंच में हमारी सरकारे कुछ कड़े कदम उठाने के बजाए उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुलिस बल, पीएसी को तैनात कर देती है. अपनी वोट की राजनीति को बचाने के लिए कुछ कड़े कदम नहीं उठा सकती है जिससे इसका स्थायी समाधान हो सके.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

आरक्षण बनाम जातिविग्रह... ?

✍ **समाज प्रवाह, मुंबई**

हर देश समाज या समूह की खूबियां हुआ करती हैं. हिन्दु धर्म में जहां अनेक विशेषताएं उदारताएं रही वही जातिगत द्वेश का दूषण भी रहा है. हमारे देश की समाज रचना जाति आधारित रही और जातियां कर्म आधारित तय हुई परन्तु रोटी बेटी का व्यवहार केवल जातिगत ही हो गया है. उसमें भी कई एक ऐसी जातियां भी रही जिनका दूसरी जातियों के साथ रोजी रोटी का व्यवहार भी नहीं रहा. पहले उसमें दो प्रकार की जातियां रही-कतिपय ब्राह्मण व कुछ एक अन्य जातियां जो स्वयं को दूसरों से अलग मान कर दूसरों से रोटी व बेटी व्यवहार नहीं करती थी तो कुछ एक जातियों को हल्की (शुद्र) कहकर उनके साथ छुआछूत को लेकर रोटी बेटी का व्यवहार नहीं किया जाता था. उन छोटी जातियों के साथ सामाजिक भेदभाव भी बढ़ता गया मंदिरों, कुओं, तालाबों तक में जाने से रोका गया. सामाजिक अन्याय की पराकाश्ठा को आजादी पश्चात कानून द्वारा अपराध बना दिया गया फिर भी कई वर्षो तक यह गलत अन्यायी परंपरा चलती रही परन्तु अब उसमें काफी सुधार परिवर्तन आया है फिर भी बेटी व्यवहार तो आज भी सभी जातियों में जातिगत नाकेबंदी का आधार बना हुआ हैं.

अंग्रेजों के शासन का गुलामी व शोषण का प्रतीक भले ही कहा जाए पर उसके कई लाभ भी हुए-देश की आपसी एकता बनी, देश भर में यातायात व संचार व्यवस्था बनी. साथ ही अंग्रेजी शिक्षा को लेकर उनमें अनेक सुधार परिवर्तन भी आए, कानून व्यवस्था में सुधार हुआ. गरीब कमजोर व्यक्ति व पिछड़े तबके को समान न्याय मिलने की व्यवस्था बनी. यहां तक कि औरतों को भी समान हक और न्याय अंग्रेजी व्यवस्था ने ही दिलाया है. कहने को भले ही हमारी संस्कृति में 'यत्र नारियेस पूजन्ते तत्र देवता रमन्ते....पर हकीकत में देखा जाये तो सबसे अधिक शोषित जाति महिलाओ की रही उस पर अनेक जुल्मों के बावजूद छुटकारा (डायवोर्स) नहीं था....मतलब कि उसे कभी उसकी इच्छा का जीवन जीने का हक नहीं मिला था. यहां तक कि समान नागरिक कानून भी इसी अंग्रेजी व्यवस्था की देन कहा जाएगा फिर भी हमारी समाज व्यवस्था में महिलाओं को दोयम दर्जा ही मिला है. दर हकीकत आज भी उसकी (महिला) कोई जाति नहीं होती है, उसके लिए जातिगत पहचान पता या पति की ही मानी जाती है. सच अगर पूछा जाए तो सबसे अधिक शोषित अगर किसी जाति का उल्लेख होगा तो वह है महिला मगर उसको समूचित न्याय देने दिलाने के लिए पुरुष जमातों ने निर्णय या अंकुश अधिकार अपने हाथ में बनाए रखा हैं. पिछले ५/६ वर्षो से महिला अनामत बिल को पारित करने की डींगे तो सभी मार रहे है पर उसे पारित करने की नियत किसी की नहीं है. उसके पारित हो जाने पर भी महिलाओं को सही अधिकार मिलने की कोई गारन्टी नहीं है वहां भी बेक सीट ड्राइवर तो पति या पुरुष ही होगा.

> हरिजन पिछड़ों को आगे लाने के लिए डॉ. अम्बेडकर जी ने १० वर्ष तक आरक्षण सुविधा देने का प्रावधान किया था ताकि उनका शिक्षा में विकास हो सके और उन्हें सरकारी नौकरियों में उचित स्थान मिल सके. वे इस मामले मे स्पष्ट थे कि आरक्षण तो एक तरह की बंगाल की घोड़ी है जिससे मनुष्य का कायमी विकास संभव नहीं होगा. पर वोट पीपासू राजनेताओं ने आरक्षण को ही अपने सत्ता सुख व वोट बटोरने का आधार मान लिया और धीरे-धीरे ६ दशकों तक उसे बनाए ही रखा है. उनके लिए यह आरक्षण वोटों का आधार है-इसलिए ऐसा आरक्षण हटाने का दुस्साहस कौन करेगा?

एक तरफ जाति द्वेष का जहर चुनावों को लेकर बढ़ता फैलता गया तो दूसरी तरफ हरिजन पिछड़ों को आगे लाने के लिए शुरु में विधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर जी ने १० वर्ष तक आरक्षण सुविधा देने का प्रावधान किया था ताकि उनका शिक्षा में विकास हो सके और उन्हें सरकारी नौकरियों में उचित स्थान मिल सके. डॉ. अम्बेडकर जी इस मामले मे स्पष्ट थे और उनका मानना था कि आरक्षण तो एक तरह की बंगाल की घोड़ी है जिससे मनुष्य का कायमी विकास संभव नहीं होगा. व्यक्ति का विकास तो उसमें योग्यता लाने से ही होगा और उसके लिए शिक्षा और प्रतिभा को ही महत्व देना चाहिए. पर वोट पीपासू राजनेताओं ने आरक्षण को ही अपने सत्ता सुख व वोट बटोरने का आधार मान लिया और १०-१० वर्ष करते-करते ६ दशकों तक उसे बनाए ही रखा है

और आगे भी उसे जारी रखने का मानस बनाए हुए है. उनके लिए यह आरक्षण वोटों का आधार है-इसलिए ऐसा आरक्षण हटाने का दुस्साहस कौन करेगा? वर्तमान आरक्षण का फायदा पिछड़ो की चंद जातियों के नेताओं ने ही उठाया है. वे ही पीढ़ी दर पीढ़ी उसका लाभ उठा कर मंत्री, अफसर बने हुए हैं. उनमे के कई तो करोड़ो से लेकर अरबों की संपत्ति बना चुके है. दरअसल में एक बार जिसको उच्च पद का लाभ मिल गया फिर उसे क्यों दुबारा आरक्षण लाभ मिलना चाहिए? पर इतना सोचने का विवेक लाभ उठाने वाले वर्ग या उसके नेता को क्यों होगा? कई आरक्षण सुविधाएं प्राप्त पिछड़े नेता अपनी जाति का हित या विकास करने की बजाय राजनीति की जोड़तोड़ से पदों का सत्ता स्वार्थ लाभ बटोरने का ही काम कर रहे हैं. उनकी आर्थिक स्थिति भी बड़े करोड़पतियों को पीछे छोड़ने की हो गई हैं. कईयों ने तो दूसरी तीसरी शादियां (गैर कानूनी) वह भी उच्च वर्णीय महिलाओं से कर रक्खी है. उसके पीछे उनकी लघुता ग्रंथी की भावनाएं ही काम कर रही हैं. चूंकि सभी राजनेता अब अरबपति बन चुके हैं जिनकी रिश्वती संपत्ति की जांच कोई नहीं करता. वे सब एक दूसरे की स्थिति जानते है इसलिए किसी की पोल नहीं खुलती. सभी हमाम में एक सरीखे हैं. फिर तो आरक्षण के नाम पर न सिर्फ पिछड़े हरिजनों के और भी दूसरी सत्ता प्रभाव को लेकर नित नये कानून बन रहे हैं जिसके कारण नेताओं के गबन घोटालों से अकूत संपत्तिया बन रही है. आरक्षण की आड़ ले अनेक प्रभावी जातियों को पिछड़ी कह कर शामिल किया गया हैं. उनकी यह तादाद ६४ प्रतिशत तक पहुंच गई तब किसी ने सर्वोच्च अदालत में जनहित याचिका दाखिलकर इसका औचित्य जानना चाहा. जिस पर सर्वोच्च अदालत का दिशा निर्देशक फैसला आया कि आरक्षण की अधिकतम सीमा कुल मिलाकर ५० प्रतिशत तक ही सीमित रहे फिर भी कई राज्य सरकार निर्णय के विरुद्ध अतिरेक कर रही है. अनेक संपन्न और संगठित जातियों को पिछड़ो में शामिल कर लिया जैसे जाट, यादव, माली, सुथार, सुनार से लेकर ब्राहमण राजपूत तक सभी का समावेश आरक्षण में हो गया या हो रहा है-केवल चंद छोटी जातियां जिनमें खासकर बनियों को छोड़ सभी ओ.बी.सी. मे आ गये है या आने की तैयारी में है. इस तरह

वर्तमान आरक्षण का फायदा पिछड़ो की चंद जातियों के नेताओं ने ही उठाया है. वे ही पीढ़ी दर पीढ़ी उसका लाभ उठा कर मंत्री, अफसर बने हुए हैं. उनमे के कई तो करोड़ो से लेकर अरबों की संपत्ति बना चुके है.

के आरक्षण से सरकारी नौकरियों शैक्षणिक संस्थाओं व नौकरी की बढ़ती आदि सभी जगहों पर उन्हें इस आरक्षण का लाभ मिलने लगा है. बाकी बिचारे योग्यता का ताबीज लटकाये मारे-मारे फिर रहे है यह है लोकतंत्र के नाम पर समान नागरिक अधिकार.

जिससे वास्तविक पिछड़ा को हानी हुई है. ऐसे में एक वर्ग विग्रही शातिर चालाक राजनेता वी.पी.सिंह ने मण्डल आयोग के नाम पर आई हुई रिपोर्ट को जिसे कभी इन्दिराजी ने गठित किया था पर उस आयोग की रिपोर्ट अतिरेकी रही इसलिए उसे ठण्डे बस्ते में डालकर रख दी थी. उन भाई वी.पी.सिंह के जिन्हें राजीव गांधी से बगावत कर बोफोर्स के मुद्दे को लेकर जोड़-तोड़ की राजनीति से सत्ता मिली थी वह भाई पहले दर्जे का धूर्त, और सत्ताकांक्षी रहा जिसने रास्ते पर आने के पूर्व अनेको बार दावा किया था और अपनी जेब से कागज का पुर्जा निकालकर उस बोफोर्स दलाली का कभी कोई सबूत नहीं बता पाये. मगर सत्ता का ऐसा चस्का लग गया कि उसे बनाये रखने के लिए जब बहुमत खिसक रहा था, तो मण्डल आयोग की विवादास्पद सिफारिशों को लागू करने का निर्णय कर लिया, इतना ही नहीं मोहम्मद पैगम्बर के जन्मदिन की सार्वजनिक छुट्टी और डॉ. अम्बेडकर को मृत्यु पश्चात ३३ वर्ष बाद, भारत रत्न देकर अपनी स्थिति मजबूत करनी चाही. उन भाई के इन विवादी कृत्यों से देश में बवाल उठ गया. आरक्षण के विरोध में जगह-जगह छात्र आन्दोलन शुरु हुए. कुछ ने खुद को जिन्दा जला लिया-पर बेशरम वी.पी.सिंह को न तो शर्म हुई और नाहि ग्लानि का विवेक ही जागा, आखिर सत्ता तो गई परन्तु कई निर्दोश छात्रों की जाने गई और जातिद्वेश फैला वह अलग. यह सब देश के लिए दुखद रहा. होना तो यह चाहिए था कि बिना बहुमत के सत्ता पर बैठने वाले ऐसे सत्ताकांक्षी टूटपूजीयें को ही आग के हवाले करना चाहिए था. आज वैसे विवादास्पद तुगलकियां निर्णयों द्वारा समाज में वर्ग विग्रह फैलाने व आग लगाने का प्रयास कर कुछ दिनों की सत्ता सुख पाकर स्वयं भूतपूर्व बन जाते हैं. वर्तमान में किसी भी पार्टी के बहुमत मिलने की संभावना नहीं है. मगर सत्ता का चस्का सभी को लग चुका है. हर किसी नेता के सत्ता की ऐसी खुजली लग चुकी है कि बिना उसके वह जी नहीं सकता. सत्ता से मान मर्तब के अलावा रिश्वत खाने को बेशुमार दौलत मिलती है तो उस लालच को लेकर हर कोई नया-नया तिकड़म लगाते रहता है-आरक्षण जो अब तक केवल सरकारी नौकरियों में व सरकारी

कॉलेजों की शिक्षा तक सीमित था अब नया विवाद उसे प्राईवेट फर्मो व प्राईवेट उच्च्य शिक्षा केन्द्रों में जिनमें मेडिकल व इन्जीनियरिंग व जहां अन्य तकनीकी पढ़ाई होती है वहां लागू करने का विवादास्पद राजनैतिक निर्णय कर लिया गया हैं. एक तो उससे पढ़ाई का स्तर गिरेगा वैसे भी आज विदेशों में भारतीय डिग्रीयों को मान्यता नहीं मिलती. उनकी दुबारा परीक्षा ली जाती हैं. दूसरी बात मेडिकल का विषय तो मनुष्य के जीवन मरण से जुड़ा है इसलिये उस पढ़ाई में आरक्षण या फिर डोनेशन के बल पर स्थान नहीं मिलना चाहिये. वहां योग्यता स्तर बनाये रखा जाये. वे बेईमान नेता अपना इलाज भारत से बाहर जाकर सरकारी खर्चे से विदेशों में कराते है. खुद वी.पी.सिंह ने अपनी किडनी का इलाज इग्लैड जाकर करवाया जिसका खर्च करीब १५ करोड़ का आया था जबकि वह इलाज भारत में भी उपलब्ध था. इससे जाहिर होता है कि जिन्हें खुद के लिए भारतीय इलाज व डॉक्टरों पर विश्वास नहीं है. वे देश की सौ करोड़ जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने की कमीनी हरकते करने से बाज नहीं आते. तीसरी बात कुछ वर्ष पूर्व जिस मण्डल सिफारिशों के लागू करने का बबाल उठा था वह फिर से शुरु होगा. कई निर्दोश जान जाएंगी कोई आग लगा कर जलेगा तो कोई पुलिस की गोली से मरेगा पर इनके बाप का क्या जायेगा? इन्हें तो वोट बैंक से मतलब है. ऐसे ही आंध्र के कुछ अति धर्मनिरपेक्षी कांग्रेसियों की सरकार ने मुसलमानों के लिए सरकारी नौकरियो में आरक्षण का हुकुम निकाला तो अच्छा हुआ कि उसे कोर्ट द्वारा रद्द कर दिया गया है. फिर भी वे उसे लागू करवाना चाहेंगें परिणाम स्वरूप जाति द्वेष के साथ धर्म द्वेष की भावनाएं भी उत्तेजित होगी और देश में नया विवाद और तंग वातावरण बनेगा.

आज कल कई जातियां जो पहले स्वयं को हिन्दु कहलाती थी परन्तु अब उन सभी ने स्वयं को हिन्दु नहीं कहते हुए-अल्पसंख्यक घोषित कराने की खटपट में रही है. उनमें सिख और जैन तो सफल भी हो चुके हैं परन्तु बाकी अन्य भी उसी रास्तें राजनैतिक लाभ पाने के लिए अल्पसंख्यक बनने की दौड़ में हैं. अल्पसंख्यक घोषित होने पर आरक्षण की सूची में जूड़ना चाहते है. ये दोनों ही ऐसे प्रयास है जिनसे जातियां बढती जा रही है और उनमें स्पर्धा का द्वेश बढ़ता जा रहा है. इससे सारा देश विघटन के रास्ते चला जायेगा.

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को 'अल्पसंख्यक संस्थान' का दर्जा अदालत द्वारा निरस्त किए जाने के बावजूद उसे वह सुविधा दी जा रहा है. इससे पहले निजी शिक्षा संस्थाओं में आरक्षण द्वारा फिर 'अल्पसंख्यक' शिक्षा संस्थानों को सीधे केंद्रीय विश्वविद्यालयों से जोड़ने का निर्णय हुआ. फिर सेना व पुलिस में विशेष भर्ती अभियान चला कर मुस्लिम संख्या बढ़ाने की घोषणा भी हुई. धनी मुसलमानों को भी हज सब्सिडी देने का निश्चय हुआ. अल्पसंख्यक आयोग को संवैधानिक दर्जा, यानी एक तरह की सत्ताधारी हैसियत दे दी गई. उत्तर प्रदेश में एक और इस्लामी विश्वविद्यालय तथा बिहार में दारागाओं की नियुक्ति में २० प्रतिशत से अधिक स्थान 'उर्दू जानने वालों' के लिए सुरक्षित किया गया. एक सेक्यूलर शासन प्रणाली में ऐसे मज़हब सापेक्षी निर्णयों पर सदैव वहीं घिसी-पिटी बात दुहराई जाती है उससे कि मुसलमानों का 'वोट-बैंक' के रूप में इस्तेमाल हो रहा है.

सन् २००५ में बिहार विधानसभा के पहले चुनाव में विवादी नेता रामविलास पासवान ने मांग की कि संसद भवन में मुहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर लगाई जानी चाहिए. तो लालू प्रसाद ने गोधरा में इस्लामी संगठनों द्वारा हिंदू-दहन को 'एक्सीडेंट' या आत्महत्या बताया. उसी वर्ष बिहार विधानसभा के चुनाव में पासवान ने 'मुख्यमंत्री मुस्लिम हो' की मांग पर अपना चुनावी दाव फेंका. उत्तर प्रदेश में नीतीश कुमार ने मुसलमानों के लिए पांच प्रतिशत आरक्षण का चढ़ावा प्रस्तावित किया. बिहार के पिछले चुनाव में ओसामा बिन लादेन के हमशकल को लेकर पासवान जगह-जगह घूमे तो बाद में लालू प्रसाद भी उसे साथ लेकर घूमे. इन सब उदाहरणों के पीछे मन्शा स्पष्ट समाज में वर्ग विग्रह का जहर फैलाकर हिन्सा का दौर चलाना है. पर खेद है कि इनकी इन शरारतों पर देश का कानून और संविधान क्यों चुप है? ऐसों के कठोर दंड मिलना चाहिए उन्हें कायमी तौर पर चुनावों के लिए अयोग्य घोषित किया जाना चाहिये तथा उनकी पार्टीयों को प्रतिबंधित किया जाना चाहिये ताकि देश की शांति व्यवस्था के साथ दुबारा कोई खिलवाड़ का साहस नहीं कर सके.

०१ वसुधैव कुटम्बकम् कितना सत्य विचार है, ऐसी भावना से उसके लिए कोई कटुता, राग एवं द्वेष नहीं. ऐसे विचार वाला प्राणी सच्चे चरित्र का बनकर उस परम सृष्टि से एकाकार हो जाता है.

०२ प्रेम की ज्योति जलने से व्यक्ति की अन्तरात्मा पवित्र हो जाती है. राग, द्वेष, कुटिलता तिरोहित होकर मन शुद्ध हो जाता है. **दाउजी**

युवा वर्ग और हिंदी

अजय चतुर्वेदी 'कक्का',
सोनभद्र, उ.प्र.

यह दुःखद और दुर्भाग्य पूर्ण है कि संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान देने और अनवरत प्रचार-प्रसार के बावज़ूद आज तक उसे उसका वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसकी वह अधिकारिणी है. अक्सर यह कहने-सुनने में आता है कि युवा वर्ग का लगाव अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी से कम हो रहा है. हमारी युवा पीढ़ी अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी के कितना पास है या कितनी दूर है. हिन्दी के प्रति उसका कितना लगाव है. इसे समझने के लिए आजादी के वक़्त हिंदी की क्या स्थिति थी और आज क्या स्थिति है. इस पर भी विचार करना आवश्यक होगा. कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जाने-अनजाने हमारे पूर्वजों ने कुछ ऐसे भी कार्य किये हैं जो हमारी युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने के लिए काफी हैं. सन् १९४७ में देश आज़ाद हुआ. तमाम छोटी बड़ी रियासतों का भारत में विलय हुआ और नये सिरे से राज्यों की स्थापना की गई. राज्यों की सीमाओं के निर्धारण में भौगोलिक स्थिति से ज़्यादा वरियता भाषा को दिया गया अर्थात् भाषायी आधार पर राज्य की सीमाओं का निर्धारण हुआ और हमारे बीच भाषायी दीवार खड़ी कर दी गई. आज़ादी के समय शायद पाँच प्रतिशत लोग अंग्रेज़ी बोलने-समझने वाले थे लेकिन संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दे कर अंग्रेज़ी को पन्द्रह साल तक हिन्दी की सहायक भाषा के रूप में बनाये रखा गया. यानी की पन्चानवे प्रतिशत लोगों के ऊपर पाँच प्रतिशत लोगों को तवज्जो दिया गया. लोगों के ज़हन में यह बात भर दी गयी कि अंग्रेज़ी अभिजात्य और प्रबुद्ध वर्ग की भाषा है.

सन् १८३४ में लार्ड मैकाले भारत में अंग्रेजी शिक्षा लागू करने का प्रस्ताव रखा तो ब्रिटिश सरकार ने संदेह जाहिर किया कि इससे भारतीय जनता प्रबुद्ध हो जायेगी. तब मैकाले ने कहा था-'स्वतंत्रता तो समय की माँग है. आज नहीं तो कल हर देश स्वतंत्र होगा लेकिन अंग्रेजी शिक्षा से भारतीय हमेशा मानसिक रूप से गुलाम बने रहेंगे.' बावजूद इसके स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमने अपनी शिक्षा नीति को नहीं बदला.

इतना ही नहीं एक बार फिर सन् १८५२ में 'वुड्स डिस्पैच' प्रस्ताव लाया गया तो अलैक्जेण्डर डफ नामक मिशनरी ने ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्ताव रखा था कि भारत की शिक्षा ईसाई मिशनरियों को दे दीजिए और अनंत काल तक भारत पर राज्य कीजिए किन्तु अंग्रेज़ सरकार जनविद्रोह के डर से जोखिम उठाने का साहस न कर सकी. विदेशी निवेशकों को भारत में विश्वविद्यालय खोलने का निमंत्रण दे रहे हैं. कुकुरमुत्तों की तरह कान्वेन्ट स्कूल खोले जा रहे हैं. वही जिलापरिषदीय विद्यालयों की स्थिति से सभी अच्छी तरह वाकिफ़ हैं.

हमारी निजी उड़ानों में हमारे देश की परिचारिकाएँ हमसे अंग्रेज़ी में बात करती है. गोया उन्हें हिन्दी नहीं आती या हम अंग्रेज ठहरे जो कि हिन्दी समझ ही नहीं सकते. वही विदेशी उड़ानों में वहाँ की परिचारिकाएँ अपनी भाषा में यात्रियों से बात करती है.

डॉ वेद प्रताप वैदिक का एक आलेख पढ़ा था-उन्होंने कई घटनाओं का जिक्र किया था. उनमें से एक घटना को बानगी के तौर पर व्यक्त करना चाहूँगा-उन्होंने लिखा था कि एक बार वे चेकोस्लोवाकिया में वहाँ के प्रसिद्ध जन-नेता और संसद के अध्यक्ष डॉ० स्मरकोवस्की से जब मिलने गये तो उसके विदेश मंत्रालय ने एक ऐसा दुभाषिया भेजा जो अंग्रेज़ी से चेक में अनुवाद करता था. उन्होंने पूछा कि मैं भारतीय हूँ मेरे लिए अंग्रेज़ी वाला दुभाषिया क्यों भेजा तो उसने जवाब दिया कि आपके देश से आने वाले विद्वान, नेता और कूटनीतिज्ञ अंग्रेज़ी का ही प्रयोग करते हैं. यानी वहाँ का नेता अपनी भाषा में बात करने में शर्म नहीं महसूस करता लेकिन हम हिन्दुस्तानी हिन्दी बोलने में शर्मिंदगी महसूस करते हैं.

कितना शर्मनाक है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी का पखवारा मनाने और प्रति वर्ष अरबों रुपये खर्च करने वाले देश की संसद में उसके सांसद अंग्रेज़ी में बहस करते हैं. अंग्रेज़ी बोलना शान समझते हैं, वहीं दूसरी ओर अटल जी एक बार संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण दे दिये उसका उद्धरण देते फिरते हैं. यदि वे हमारे पद चिंहों पर चलते, हमारे ही जैसा कथनी-करनी में अंतर रखते तो आज हिंदी किस स्थिति में होती इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। हमें बच्चों-युवाओं को उपालम्भित करने की बजाय उन पर गर्व करना चाहिए कि हमारी युवा पीढ़ी हमारी तमाम गलतियों के बावजूद अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति हमसे कहीं ज्यादा सजग, समर्पित और उसे अंगीकृत किये हुए है. आज जो भी साहित्य रचा जा रहा है, उसमें युवा रचनाकारों की भूमिका और योगदान सर्वाधिक है. आज देश भर में विपुल मात्रा में प्रकाशित हो रहे पत्र-पत्रिकाएँ इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि हमारी युवा पीढ़ी के हाथ में हमारी राष्ट्रभाशा हिंदी हमसे कहीं ज्यादा सुरक्षित है.

भ्रष्टाचार का खेल

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय में चल रहा खुलेआम भ्रष्टाचार का नंगा नाच

धनजय भाँवसार, इंदौर,म.प्र.

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली) द्वारा अवैध रूप से झूठे प्रचार-प्रसार के नाम पर करोड़ों-अरबों रूपयों की धनराशि के सरकारी विज्ञापनों की कलाबाजारी हो रही है. यह कालाबाजारी पिछले कई वर्षो से चल रही है. जो कल भी जारी थी, आज भी जारी है और आगे भी यूं ही जारी रहेगी. क्योंकि ये गदां है, पर भाई ये धन्धा है.

जानकारी के अनुसार विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय भारत सरकार के सरकारी विज्ञापनों को जारी करने वाला विभाग है. जिसको प्रति वर्ष बजट में भारत सरकार द्वारा अरबों रूपयों की धनराशि आंवटित की जाती है. यह धनराशि देश के आम नागरिकों के खुन-पसीने की गाढी कमाई की होती है. लेकिन यह धनराशि पिछले कई वर्षो से भ्रष्टाचार की भेंट चढ रही है और आगे भी चढती रहेगी.

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय के अधिकारियो एवं कर्मचारियों के सहयोग से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, न्यूज चैनलों के धन्धेबाज ब्लेक मेलर मालिको, सम्पादकों द्वारा सक्रिय दलालों की अन्दरूनी मीलीभगत से करोड़ो रूपयों का व्यारा-न्यारा हो रहा है. निदेषालय में दलालो द्वारा ऐय्याष अधिकारियों, इनसे जुडे नेताओं, मंत्रीयों को आये दिन दलालों द्वारा सुरा व सुन्दरिया उपलब्ध करायी जाती है. बदले में दलाल पचास प्रतिशत कमीशन पर विज्ञापनों की सप्लाई करते हैं. इन दलालों को राजनेताओ, मंत्रियो, अधिकारियों का पूरा-पूरा संरक्षण प्राप्त है. ये सभी सफेद पोश, सरकारी, गैर सरकारी आतंकवादी दिन दोगुनी रात-चौगुनी तरक्की कर रहे है अथवा बन चुके है. ये सब धन्धेबाज व्यापारी लोग है, समय पड़ने पर ये सभी लोग देश और देश की जनता को विदेशी लोगों को बेचने में जरा भी हिचक नहीं करेगें. इन सबका एक ही नारा है-'अपना काम बनता, भाड़ में जाये जनता.'

इस संदर्भ में निदेशालय को कालाबाजारी के संबंध में नेत्रहीनों की सहायता, जनता की पुकार के मासिक समाचार पत्रों के पिछले कई अंकों से कई बार समाचार भी प्रकाशित किए जा चुके है और सभी प्रकाशित अंकों की प्रतियां भारत सरकार व मध्यप्रदेश सरकार को डाक द्वारा भी प्रेषित भी की जा चुकी है. किन्तु आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई. इस संबंध में नेत्रहीन सम्पादक श्री धनंजय भावसार द्वारा सर्व उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दिनांक १५. १२.२००८ को दायर कि गई थी. जिस संबंध में उच्चतम न्यायालय ने मुख्य सचिव को आवश्यक कार्यवाही करने हेतु आदेश प्रेषित किये गये. उपरोक्त संबंध में अध्यक्ष राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, दिल्ली व गृह मंत्रालय, भारत सरकार दिल्ली द्वारा सूचना एवं प्रसारण एवं मंत्रालय दिल्ली को उक्त मामले में आवश्यक कारवाई करने हेतु दो-दो बार आदेश प्रेषित किये जा चुके है किन्तु परन्तु इसके बावजुद भी दोनों ही मुख्यालयों पर आज दिनांक तक कोई ठोस संतोषजनक कार्यवाही नहीं हुई है.

राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता का परिणाम

डॉ० राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता-२०१० के लिए श्रीमती संतोष शर्मा 'शान', हाथरस, उ०प्र० का चयन कहानी 'रिक्शा' के लिए किया गया है।

डॉ० राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता हेतू कहानियां आमंत्रित है

पुरस्कार राशि २१०००/-रुपये

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. राज बुद्धिराजा की तरफ से **'डॉ. राज बुद्धिराजा कहानी प्रतियोगिता'** हेतू प्रविष्टिया आमंत्रित है। सर्वोच्च कहानीकार को २१०००/रुपये प्रदान किया जाएगा। कहॅानियां अधिकतम २००० शब्द तक होनी चाहिए. अपनी एक कहानी, सचित्र जीवन परिचय, टिकट लगे जवाबी लिफाफे व एक पोस्टकार्ड के साथ ३० अक्टूबर २०११ के पूर्व कार्यालय को प्रेषित कर देवें। इस उपरान्त प्राप्त कहानियों पर विचार नहीं किया जाएगा.

विशेषः पुरस्कार राशि को कम या अधिक करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा

मीडिया का अंडरवर्ल्ड

डॉ० विकास मानव,
संपादक, ग्लोबल वर्ल्ड, मेरठ, उ.प्र.

मीडिया के लोगों के सोचने के तरीके को प्रभावित करता है, यह चर्चा पुरानी है. १९२२ में पहली बार बाल्टर लिपमैन ने अखबार में काम करने के अपने अनुभव के आधार पर यह कहा कि मास मीडिया छवियों के सहारे लोगों की राय बनाता है. दो बार पुलित्जर पुरस्कार विजेता वाल्टर लिपमैन को लोक-विमर्श पर मास मीडिया के असर के बारे में अध्ययन की शुरुआत करने वाला माना जाता है. दो विश्वयुद्धों के बीच के दौर में अमेरिका और यूरोप में प्रेस, सिनेमा और रेडियों के तेज गति से विकास पर टिप्पणी करते हुए लिपमैन ने इसे लोकतांत्रिक भीड़तंत्र में मैन्युफैक्चर ऑफ कंसेट यानी आम सहमति का निर्माण या उत्पादन कहा. इस पूरी प्रक्रिया में लिपमैन मीडिया की विज्ञापनों पर निर्भरता, उपभोक्तावाद के बढ़ने और एक ऐसे समाज की महत्वपूर्ण भूमिका देखते है, जहां जनतम का अराजनीतिकरण हो गया हो. लिपमैन १९२२ में अमेरिका और यूरोपिय मीडिया की जिन प्रवृत्तियों की शिनाख्त कर रहे थे, उसका विस्तार वर्तमान भारतीय मीडिया में देखा जा सकता है. मीडिया की विज्ञापनों पर निर्भरता ९०प्रतिशत तक बढ़ गई हैं. अंतर्राष्ट्रीय संचार के प्रोफेसर दया किशन धुस्सू ने अपनी किताब 'मीडिया ऐज़ एंटरटेनमेंट' में भारतीय संदर्भ में बताया है कि किस तरह यहां समाचार पर मनोरंजन हावी हो गया है इससे अंततः किसका हित सधता है.

अमेरिका के राष्ट्रपति चुनावों में मतदाताओं पर मीडिया के असर का अध्ययन करते हुए मेक्सवेल मैकॉम्स और डोनाल्ड शॉ इस नतीजे पर पहुंचे कि संपादक, टी.वी, प्रसारणकर्मी ओर पत्रकार खास तरह से खबरें चुनते हैं और उसे दिखाते हैं, जिसकी जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है. खबर में कितनी जानकारी दी गई है और उसे कितने महत्वपूर्ण तरीके से पेश किया है, इससे पाठक न सिर्फ बताए गए मुद्दों को कितना महत्व देता है. मीडिया या मीडिया का बड़ा या प्रभावशाली अंश अगर किसी मुद्दे से संबंधित घटनाओं को लगातार पहले पन्ने पर या प्रमुख शीर्षक के रूप में दिखाए, तो इस बात की काफी संभावना है कि लोग उस मुद्दे को महत्वपूर्ण मानने लगेंगे. कई अखबार और चैनल जब किसी खबर को हेडलाइन बनाते हैं तो वह खबर देश की सबसे बड़ी खबर मान ली जाती हैं. इसी तरह किसी मुद्दे की मीडिया में लगातार अनदेखी होने का नतीजा यह हो सकता है कि लोग भी उस मुद्दे को कम महत्वपूर्ण मानने लगें. चुनाव प्रचार के दौरान उम्मीदवार की कही गई बातों से खास मुद्दे चुनकर मीडिया चुनाव अभियान का एजेंडा तय कर सकता है. इसी तरह किसी व्यक्ति का प्रासंगिक होना या न होना भी अक्सर इस बात से तय होता है कि मीडिया में उसे कितने महत्वपूर्ण ढंग से पेश किया जा रहा है.

मेक्सवेल मैककॉम्स और डोनाल्ड शां का यह भी कहना था कि इन दिनों (यह शोध १९७२ में छपा था) उम्मीदवार लोगों तक पहुंचने के लिए खुद उन तक जाने की जगह मास मीडिया का इस्तेमाल पहले से कहीं ज्यादा कर रहे हैं. मीडिया जो सूचना देता है वह कई लोगों के लिए राजनीति के बारे में जानने का एक मात्र जरिया बन जाता है. दो चुनावों के बीच के समय में राजनीतिक गतिविधियों में अगर लोगों की हिस्सेदारी कम हो तो चुनाव के दौरान एजेंडा तय करने में मीडिया की भूमिका और बढ़ जाती है. मतदान संबंधी फैसला करने में जिन सूचनाओं का इस्तेमाल किया जाता है उनमें समाचारों, स्तंभों और संपादकीय लेखों में बताए गए उम्मीदवारों और पार्टियों के दावों, वादों और नारों का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं.

मेक्सवेल मैककॉम्स और डोनाल्ड शॉ ने अपने शोधपत्र में के.लैंग और जी.ई.लैंग की १९६६ की किताब 'मास मीडिया ऐंड वोटिंग' के हवाले से लिखा है कि 'मास मीडिया कुछ बातों पर ज्यादा ध्यान देने के लिए बाध्य करता है. वह राजनीतिक व्यक्तियों क सार्वजनिक छवि का निर्माण करता है. वह लगातार ऐसी चीजें पेश करता है जो लोगों को बताती हैं कि किसके बारे में कैसी भावनाएं होनी चाहिए.' इंग्लैड

■ संपादक, टी.वी, प्रसारणकर्मी ओर पत्रकार खास तरह से खबरें चुनते हैं और उसे दिखाते हैं, जिसकी जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है.

■ मीडिया का बड़ा या प्रभावशाली अंश अगर किसी मुद्दे से संबंधित घटनाओं को लगातार पहले पन्ने पर या प्रमुख शीर्षक के रूप में दिखाए, तो इस बात की काफी संभावना है कि लोग उस मुद्दे को महत्वपूर्ण मानने लगेंगे. कई अखबार और चैनल जब किसी खबर को हेडलाइन बनाते हैं तो वह खबर देश की सबसे बड़ी खबर मान ली जाती हैं.

के १९५९ के आम चुनाव का अध्ययन करते हुए ट्रेनामेन और मैकक्वेल ऐसे ही नतीजे पर पहुंचे थे. उन्होंने पाया कि मास मीडिया जिन मुद्दों पर जितना जोर देता है, लोगों को उनके बारे में उसी अनुपात में जानकारी मिल पाती है. ये उदाहरण बता रहे हैं कि एजेंडा तय करने में और खासकर राजनीतिक एजेंडा तय करने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में यूरोप और अमेरिका में साठ और सत्तर के दशक में कई शोध हुए. मीडिया का विस्तार होने के बाद अब भारत भी शायद ऐसी ही स्थिति में पहुंच चुका है, जहां मीडिया न सिर्फ सोचने के मुद्दे तय करने लगा है बल्कि किस तरह से सोचना है, यह भी बताने लगा हैं.

जब राष्ट्रजीवन में मुद्दे तय करने में मीडिया की भूमिका इस कदर बढ़ गई हो तो सरकारें मीडिया की छाया से मुक्त कैसे रह सकती है. मीडिया और सरकार के रिश्तों को लेकर चिंताएं नई नहीं है. विचार-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पहरा बिठाने वाली सबसे ताकतवर संस्था के तौर पर सरकार को चिन्हित किया जाता है. मिसाल के तौर पर वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ प्रेस परिषद की इस्ताबुल-तुर्की में सितंबर १९९८ में हुई बैठक में घोषणा की गई कि-'प्रेस की स्वतंत्रता का मतलब सिर्फ पत्रकारों, संपादकों या मीडिया मालिकों की स्वतंत्रता नहीं है बल्कि यह सभी नागरिकों का लोकहित के विषयों पर सब कुछ जानने का अधिकार है. स्वतंत्र प्रेस का यह भी मतलब है कि वह इस अधिकार का इस्तेमाल जिम्मेदारी के साथ करेगा. प्रेस को सरकार के प्रति नहीं बल्कि जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए. इस घोषणा में मीडिया के लिए लोकहितकारी होने की कसौटी रखी गई है और इसकी लक्ष्मणरेखा तय करने की कोशिश की गई है. इस घोषणापत्र में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मीडिया के केंद्र में नागरिकों को रखा गया है. यह मूल स्थापना ही आज खतरे में है कि मीडिया के केंद्र में मुनाफा, विज्ञापन, बैंलेस शीट, अन्य तरह के फायदे, कॉरपोरेट, सरकार, राजनीतिक दल आदि नहीं, बल्कि लोग और उनका हित होना चाहिए. यूनेक्को की पहल पर बने मैकब्राइड कमीशन ने भी अपनी रिर्पोट में सूचनाएं हासिल करने और उन्हें दूसरों तक पहुंचाने को बुनियादी मानवाधिकार माना हैं. कमीशन का मानना है कि संचार की बुनियादी प्रकृति ऐसी है कि उसका पूरा इस्तेमाल राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक माहौल और खास तौर पर राष्ट्र के भीतर और राष्ट्रों के बीच लोकतंत्र होने पर निर्भर है. मीडिया और संचार की प्रवृत्तियों की आलोचना को मैकब्राइड कमीशन एक बड़े फ्रेमवर्क में देखता है. यह फ्रेमवर्क मीडिया को देश-काल-समाज से अलग-थलग नहीं मानता. यह एक व्यापक आधार है, जो मीडिया को समझने के उपकरण मुहैया कराता है.

मीडिया और समाज को लेकर सैद्धातिकी की बातें करें तो वर्तमान मीडिया परिदृश्य में यह सवाल महत्वपूर्ण हो जाता है कि मीडिया की वर्तमान प्रवृत्तियां देश और समाज में आ रहे बदलाव का कारण है या परिणाम. यानी क्या मीडिया इसलिए बदल रहा है कि समाज, उत्पादन संबंध, लोगों के विश्वास, उनके विचार और कई बदलाव लाने में मीडिया कारक की भूमिका निभा रहा है? इससे जुड़ा एक सवाल यह भी है कि क्या टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आ रहा बदलाव समाज और उसके साथ ही मीडिया को निर्णायक रूप से बदल रहा है? मीडिया और समाज को लेकर प्रचलित कई परंपरागत सिद्धात भी स्थितियों को समझने में मदद करते हैं. मिसाल के तौर पर, मीडिया के बारे में सी.राइट मिल्स और कई अन्य लेखकों ने यह माना कि सत्ता का इस्तेमाल करने वाली संस्थाएं एक दूसरे से गुंधी हुई होती है और इस नाते उन्होंने मीडिया की भी सामाजिक सत्ता और अधिकार के स्रोत के तौर पर देखा. मास सोसायटी थ्योरी नाम से प्रचलित इस सिद्धांत का आधार यह है कि समाज का आकार काफी बड़ा है और व्यक्ति का दायरा बेहद सीमित है. ऐसे में केंद्रीकृत मीडिया एकतरफा संवाद चलाता है और इसका असर इतना ज्यादा है कि लोग अपनी पहचान के लिए मीडिया पर निर्भर हो जाते हैं. इस सिद्धांत के मुताबिक, मीडिया को एकाधिकारवादी यानी इजारेदारी तरीके से चलाया जाएगा, और यह लोगों की भीड़, दर्शक, पाठक, उपभोक्ता, बाजार, मतदाता में बदलने का असरदार माध्यम बनेगा. इस सिद्धांत के सबसे प्रखर प्रणेता सी.राइट मिल्स के मुताबिक जनसंचार माध्यम 'ऊपर से' अलोकतांत्रिक नियंत्रण कायम करने का जरिया बन जाते हैं, जहां पलटकर जवाब देने के मौके कम होते हैं.

इस सिद्धांत के अलावा मीडिया के व्यवहार और सरंचना की मार्क्सवादी

■ मीडिया और सरकार के रिश्तों को लेकर चिंताएं नई नहीं है. विचार-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पहरा बिठाने वाली सबसे ताकतवर संस्था के तौर पर सरकार को चिन्हित किया जाता है.

■ वर्तमान मीडिया परिदृश्य में यह सवाल महत्वपूर्ण हो जाता है कि मीडिया की वर्तमान प्रवृत्तियां देश और समाज में आ रहे बदलाव का कारण है या परिणाम.

व्याख्या भी की जाती रही हैं. मीडिया स्वामित्व के जरिए मीडिया के स्वभाव के बारे में कई तरह के सवालों के जवाब ढूंढने की कोशिश होती रही है और बाद के दौर में लुई अल्थूसर ने मीडिया की व्याख्या राज्य के वैचारिक तंत्र के तौर पर की है. ग्राम्शी की प्रभुत्व या वर्चस्व की अवधारणा भी मीडिया में प्रभुत्वशाली वर्ग तथा इलीट यानी अभिजन के वर्चस्व को समझने में मदद करती हैं. अल्थूसर और ग्राम्शी को मीडिया के नवमार्क्सवादी व्याख्याकारों की श्रेणी में रखा जाता है.

भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया और खासकर चुनावों में मीडिया का हस्तक्षेप और उसकी भूमिका बढ़ने की व्याख्या लोक विमर्श के क्षय, आम सहमति के निर्माण, वर्चस्व यानी हेजेमनी, मास सोसायटी थ्योरी, मीडिया मोनोपोली जैसी सैद्धांतिकियों के दायरें में एक हद तक देखा और पढ़ा जा सकता है. पश्चिमी देशों में मीडिया के विस्तार और प्रभाव तथा समाज के साथ मीडिया के अंतसंबंध ों की विशिष्टताएं तो हैं लेकिन भारतीय संदर्भ में मीडिया की कई प्रवृत्तियों के जवाब पश्चिम में चले मीडिया विमर्श के सहारे तलाशे जा सकते हैं. हालांकि भारतीय मीडिया और समाज के रिश्तों की कुछ विशिष्टताएं ऐसी है, जहां पश्चिम का मीडिया विमर्श या तो खामोश है या फिर कुछ उलझे-से सूत्र छोड़ता है. इन विशिष्टताओं के अध्ययन की परंपरा का विकास अभी होना है इसलिए भारतीय मीडिया विमर्श जितने सवालों के जवाब देने में सक्षम है, उससे कई गुना ज्यादा सवाल और गुत्थियां अनसुलझी रह जाती हैं.

मिसाल के तौर पर मौजूदा समय में मीडिया के बहुचर्चित विषय पेड न्यूज की पश्चिम में कोई परंपरा नहीं हैं. चुनाव खर्च पर कोई सीमा न होने के कारण कई देशों में पेड न्यूज उस शक्ल में नहीं दिखता, जिसे लेकर भारतीय लोकतंत्र में गहरी चिंता है. नेताओं और राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव के दौरान मीडिया में स्पेस खरीदने को कई देशों में नीति विरुद्ध नहीं माना जाता है. बल्कि कई देशों में घोषित तौर पर राजनीतिक दल टेलीविजन पर समय खरीदते हैं. इसी तरह एक और महत्वपूर्ण सवाल क्रॉस मीडिया ओनरशीप यानी एक ही मीडिरूा संस्थान द्वारा मीडिया के अलग-अलग रुपों के संचालन का है. भारत में क्रॉस मीडिया ओनरशिप को लेकर न कोई गंभीर बहस है और न ही कोई कायदा-कानून, जबकि पश्चिमी देशों में इसे लेकर काफी सर्तकता है और इसके रेगुलेशन यानी विनियमन अब काफी हद तक शक्ल ले चुके हैं.

भारतीय मीडिया में न्यूजरुम डायवर्सिटी को लेकर भी चेतना और चर्चा का अभाव है, जबकि पश्चिमी देशों में यह सवाल कम से कम ३०-४० साल से चर्चा में हैं. जाति के प्रश्न पर भारतीय मीडिया की विशिष्ट दृष्टि और न्यूज रूम में दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और मुस्लिमों की अनुपस्थिति या कम उपस्थिति की पश्चिमी मांडलो के आधार पर कोई व्याख्या संभव नहीं है, क्योकि यह भारत की और इस वजह से भारतीय मीडिया की विशिष्ट समस्या है. जातीय आरक्षण के सवाल पर भारतीय मीडिया के खास तरह के जातिवादी व्यवहार को समझने में पश्चिम की मीडिया विमर्श मदद नहीं करता. अंग्रेजी और भारतीय भाषाओंके मीडिया अर्थशास्त्र में अंतर की भी व्याख्या भारतीय संदर्भों से ही संभव है और इस मामले में भी पश्चिम का अनुभव कोई नजरिया नहीं देता. हालांकि हेजेमनी यानी वर्चस्व के सिद्धांत के आधार पर एक व्यापक दायरें में इनमें से कुछ सवालों के जवाब तलाशे जा सकते हैं क्योंकि भारतीय मीडिया की लगभग तमाम प्रवृत्तियों में एक बात समान रुप से मौजूद है, और वह है मीडिया का इलीट चरित्र और सामाजिक-आर्थिक वंचितों के मुद्दों और हिंतो की व्यापक अनदेखी तथा उनका नकारात्मक चित्रण.

भारतीय मीडिया की विशिष्टताओं की बात करते समय सबसे पहले ध यान पेड न्यूज के चलन पर जाता है. वर्तमान संदर्भ में इसकी चर्चा राजनीतिक और खासकर चुनाव के दौरान किए गए पैकेज कवरेज के लेकर है. यह प्रवृत्ति नई नहीं है और पेड न्यूज के दायरे में अगर कारोबारी और मनोरंजन क्षेत्र के पेड न्यूज को लें आए और भुगतान के दायरे को पैसे से बढ़ाकर राज्यसभाकी सीट, पद्म पुरस्कार, जमीन, फ्लैट, सरकारी विज्ञापन, लाइसेंस, टैक्स और ड्यूटी में छूट आदि तक कर दें तो राजनीतिक पेड न्यूज कोा लेकर चौंकने का भाव खत्म नहीं तो कम जरूर हो जाएगा. इस नजरिए से २००९ में भारत में पेड न्यूज के जिस रूप काा खुलेआम प्रदर्शन हुआ, उसे पेड न्यूज के परंपरागत रुपों का चुनाव के दौरान हुआ खुला विस्तार कहा जा सकता है.

■ प्रेम के सम्मुख जड़ चेतन हो जाता है हिंसक जंगली जानवर पालतू बन जाते हैं. कुटिता सज्जन, बर्बर सभ्य तथा पशु भी ममतालु बन जाते हैं तथा पवन समीर बन जाता है, वायु षीतल पड़ जाता है एवम् बाढ़ थम जाती है.

■ प्रेम सृजन है. सच्ची आत्मा लगन, श्रद्धा एवम् विश्वास से किए गए प्रेम में वास्तविकता होती है, वह पवित्र होता है.

दाउजी

यादें

जब दिल ही टूट गया

✍डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा,
ग्वालियर, म.प्र.

कुन्दन लाल सहगल ने फिल्म शाहजहां क लिए १६४६ में यह प्रसिद्ध गीत गाया था. इस महान गायक का जन्म ११ अप्रैल १६०४ को जम्मू-कश्मीर में हुआ था. इनके पिता अमरचन्द जम्मू-कश्मीर के राजा के दरबार में तहसीलदार थे. इनकी मां केसरबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी. जिन्हें संगीत से बेहद लगाव था. वे छोटे कुन्दन को धार्मिक सभाओं में साथ ले जाती थीं जहां भजन-कीर्तन गाए जाते थे.

छोटे कुन्दन ने जम्मू की रामलीला में सीता का अभिनय कई बार किया. उसने स्कूल छोड़ दिया और रेलवे टाईम कीपर की नौकरी कर ली. फिर उन्होंने रेमिंग्टन टाईपराइटर कम्पनी में सेल्समैन की नौकरी कर ली. इसके अन्तर्गत इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों में घूमने का मौका मिला. लाहौर में उनकी मुलाकात मेहरचन्द्र जैन से हो गई. ये दोनों गहरे दोस्त बन गए. फिर दोनों कलकत्ता पहुंच गए. मेहरचन्द ने सहगल के गानों को बेहद प्रोत्साहन दिया.

१६३० के आसपास उस समय प्रसिद्ध संगीतकार हरिश्चन्द्र बाली सहगल को कलकत्ता ले आए जहां भारतीय सिनेमा का तब गढ़ था. बाली ने सहगल की मुलाकात आर.पी.बोराल से कराई. न्यू थियेटर ने सहगल को २००रुपये माहवार पर अनुबन्धित कर लिया. बाली के संगीत निर्देशन में सहगल ने कुछ पंजाबी गीत गाए.

सहगल ने फिल्मों में भी अभिनय किया. १६३२ में उन्होंने मोहब्बत के आंसू, सितारा और जिन्दा लाश में अभिनय किया. १६३३ की फिल्म पूरन भगत के चार भजन बहुत लोकप्रिय हुए. अन्य फिल्में यहूदी की लड़की, चण्डीदास और देवदास बनें. देवदास के गाने लोकप्रिय हुए जैसे-बालम आए बसो मोरे मन में एवं दुख के अब दिन बीतत नाहिं. अन्य फिल्में आई जैसे-दीदी, प्रेसीडेन्ट, साथी, स्ट्रीट सिंगर और जिन्दगी.

१६४१ में सहगल मुम्बई आा गए जहां रंजीत मूवीटोन के साथ उन्होंने काम शुरु किया. सफल सिनेमा जैसे भक्त सूरदास और तानसेन बनीं. दिया जलाओ औ दो नैना मतवारे गाने लोकप्रिय हुए. सहगल ने मृत्यु के पूर्व शाहजहॉ के लिए तीन सफल गाने गाए-मेरे सपनों की रानी, ऐ दिले बेकरार झूम, और जब दिल ही टूट गया. १८ जनवरी १६४७ को ४२ वर्ष की आयु में सहगल की मृत्यु हो गई. सहगल के पीछे उनकी पत्नी श्रीमती आशा रानी, तीन बच्चे और एक गोद ली बच्ची रह गई.

१५ वर्ष के कार्यकाल में सहगल ने २६ हिन्दी/उर्दू, ७बंगाली एवं तमिल फिल्म में अभिनय किया. दुलारी बीबी नाम से एक कॉमेडी में भी अभिनय किया. फिल्मों में ११० हिन्दी/उर्दू, ३० बंगाली, २ तमिल गीत गाए. गैर फिल्मी गानों में ३७ हिन्दी/उर्दू, २ बंगाली गीत गाए.

१६५५ में बी.एन.सरकार ने सहगल के जीवन पर आधारित अमर सहगल नाम की फिल्म बनाई.

इस महान गायक एवं अभिनेता की स्मृतियों को प्रणाम.

मानद उपाधियों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

अहिन्दी भाषी देशों व राज्यों के लिए:-

०१ हिन्दी रत्न-११०००रुपये, ०२ हिन्दी गौरव-५१००/-रुपये ०३ हिन्दी श्री-२५००/-रुपये

हिन्दी भाषी राज्यों के लिए :-

०१ हिन्दी भाषा रत्न-११०००/-रुपये, ०२ हिन्दी भाषा गौरव - ५१००/-रुपये,
०३ हिन्दी भाषा श्री- २५००/-रुपये,

विस्तृत जानकारी व आवेदन के लिए जवाबी टिकट लगे जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:-

सचिव,
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उत्तर प्रदेश,
ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

अपाहिज बिमला बुलंदियों के शिखर पर

डॉ० चन्द्रावती नागेश्वर,
कोरबा, छ.ग.

आज सुबह ठाकुर मैडम ने जब अखबार उठाया तो मुखपृष्ठ पर बिमला की फोटो पर उनकी नजर पड़ी. राज्यपाल से पुरस्कार प्राप्त करती हुई बिमला. छत्तीसगढ़ राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट सेवा हेतु बिमला को ५०,०००/रुपये की राशि और प्रमाण पत्र दिया गया था. अपनी शिष्या की उस उपलब्धि पर उन्हें हर्षमिश्रित सुखद आश्चर्य हुआ.

मंजूलता ठाकुर रिटायर्ड शिक्षिका हैं. उन्होंने चश्में का कांच अच्छी तरह साफ किया और पूरी खबर का एक-एक अक्षर ध्यान से कई-कई बार पढ़ा. हेडिंग लिखा था, 'अपाहिज बिमला बुलंदियों के शिखर पर' समाचार पढ़ने की धुन में चाय ठंडी हो गई, पर उनका उत्साह ठंडा नहीं हुआ. उनके स्मृति पटल पर बिमला के जीवन की कथा चित्र की भांति अंकित हो उठी. ठाकुर मैडम को आज से पच्चीस साल पहले की वो बिमला याद आ गई जो दीनहीन अपाहिज दूसरों की दया के भरोसे रहती थी. सांवली सी, साध ाारण नैन नक्श वाली दुबली पतली बिमला जो प्रायः घर के सामने चबूतरे पर बैठी बड़ी हसरत से अपने हमउम्र बच्चों को दौड़ते, भागते, खेलते, कूदते देखती रहती. तब ठाकुर मैडम रोज शाम को दूध लेने उनके घर जाया करती थी. बिमला के पिता पंचराम के पास ८-१० भैंसे और ३-४ गायें थी. दूध बेचकर अपना गुजारा करते थे. उनके ६ बच्चे थे, जिनमें ४ बेटियां और २ बेटे थे. पंचराम के आंगन में खाट बिछा होता, जिस पर खांटी दूध लेने वाले उनके दूध दुहते तक बैठते थे.

बिमला की दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी. बिमला भी ६ वर्ष की हो चुकी थी. एक दिन मैडम ने पंचराम से कहा-'पंचराम तुम बिमला को पढ़ने क्यों नहीं भेजते.?'

'पढ़-लिख के क्या कर लेगी? चल फिर तो सकती नहीं.'

तुम्हारे ६ बच्चों में तुमने किसी को नहीं पढ़ाया.?'

'लड़की जात ला पढ़ाके क्या फायदा? घर के काम काज सीख ले बहुत है.'

'लड़के को पढ़ने क्यों नहीं भेजते?'

'गाय गोरू कौन चराही?'

'बिमला तो काम काज नहीं कर सकती, उसे तो पढ़ने भेज दो. पढ़ लिखकर

तुम्हारे दूध बिक्री का हिसाब सही रखेगी. कुछ अच्छी बातें सीख लेगी. ऐसे भी यहां वहां बैठी रहती है. स्कूल में बैठेगी तो ज्ञान की बातें सीखेंगी.'

उसकी बातों से प्रभावित होकर पंचराम बिमला को स्कूल भेजने को तैयार हो गया. सुबह ११.०० बजे उसे स्कूल छोड़ देता, लेकिन शाम को ५.००बजे उसे लेने नहीं जा पाता. शाम के समय उसके ग्राहक घर पहुंच जाते, तब मैंने कहा कि अब से मैं दूध लेने तुम्हारे घर नहीं आऊँगी. बिमला मेरे घर पर छुट्टी के बाद बैठी रहेगी. मेरा घर स्कूल के पास ही तो है, तुम मेरे घर दूध पहुंचा देना.

बिमला की पढ़ाई शुरु हो गई. उसने पांचवी की परीक्षा द्वितीय श्रेणीा में पास कर ली. मैं अपने मोहल्लेवालों को कहकर सबसे रद्दी पेपर उसके लिए खरीद देती. बिमला उस रद्दी पेपर के विभिन्न आकार के लिफाफे बना देती. किराने की दुकान वाले उसे खरीद लेते. इस तरह विमला के अतिरिक्त समय का सदुपयोग होने लगा. कुछ पैसे उसके हाथ में आने लगे. स्कूल में मध्यान्ह भोजन मिल जाता, किताब, कापी, ड्रेस, बस्ता मिल जाता.

जब विमला का पांचवी का रिजल्ट निकला तो मैंने उसे एक सुन्दर सी डायरी और पेन उपहार में दिया. डायरी के प्रथम पृष्ठ पर लिखा थाः-

प्रिय बिमला
पांव नहीं तो क्या हुआ?
हौसलों की तुममे नहीं है कमी।
मुसीबतों से न हारना कभी,
आंखों में न हो बेबसी की नमी।।

विमला के लिये डायरी की वह कविता जीवनमंत्र बन गया. गांव के नजदीक पास का सरकारी स्कूल जिसमें बिमला पढ़ती थी, मिडिल तक ही पढ़ाई होती थी. हाईस्कूल वहां से ६ किमी. दूर था. वहां उसे रोज-रोज कौन पहुंचाता. आठवीं के बाद विमला की पढ़ाई बंद हो गई.

विमला उदास हो गई, वह आगे पढ़ना चाहती थी. मैंने उसे दसवीं की परीक्षा प्राइवेट देने की सलाह दी. पुस्तक, कापी का इंतजाम तो हो गया. बोर्ड फीस के लिए उसने लिफाफा बनाकर पैसे इकट्ठे कर लिये. बिमला ने दसवीं की परीक्षा भी दी पर गणित में पूरक आ गया. वह पास न हो सकी.

इस बीच मेरा हाईस्कूल में प्रमोशन हो गया. प्रमोशन पर जाने से पहले कलेक्टर महोदय से मिलकर बिमला के लिए ट्राईसिकल का इंतजाम करवा दिया. पुनः दसवी कक्षा में हाईस्कूल में एडमिशन भी करवा दिया.

उसके बाद मैं बिलासपुर चली गई, अपने घर संसार में खो गई. बिमला को अपना एड्रेस दे गई. बिमला पत्र द्वारा अपनी पढ़ाई की खबर मुझे देती रहती. ट्राईसिकल मिलने पर बिमला को स्कूल, बाजार, दुकान तक आने-जाने में सुविधा हो गई. गर्मी की छूट्टी में मेहन्दी लगाना और ब्यूटी पार्लर का कोर्स ज्वाइन कर लिया. अब उसकी आय भी बढ़ गई. उसने बारहवीं पास कर लिया. रिजल्ट निकलने पर मैडम को चिट्ठी लिखकर खबर दिया.

बिमला के पिता पंचराम गाय-भैंस को चराने जंगल जाया करते थे. बिमला जब बारहवीं में थी तब एक दिन जंगल में भालू ने उसके पिता पर हमला कर दिया. मोहल्ले वालों ने देर रात तक उन्हें ढूंढकर तो लाया, लेकिन उनका बचना मुश्किल लग रहा था. उन्हें अस्पताल ले जाया गया. पंचराम की एक आंख और नाक को भालू नोंचकर निकाल दिया था. जांच में कई जगह मांस नोच डाला था. पिता के ईलाज में घर की गाय, भैंस बिक गई. पिता तो बच गये पर अपाहिज बन गये. बिमला के भाई-भौजाई कमाने खाने दूर शहर चले गये. बहने ससुराल में अपने परिवार में मगन थी. कभी-कभी हाल-चाल पूछने मायके आ जाती. १००-२००रुपये दे देती थीं.

बूढ़ी मां और अपाहिज पिता का सहारा बनकर विमला ही घर पर रह गई. छोटी कक्षा के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर खर्च निकाल लेती. शादी ब्याह के सीजन में पार्लर से काम मिल जाता. परिवार का गुजारा तो जैसे तैसे चल रहा था. बिमला के मन में अपने जैसे निःशक्तजनों के लिए स्कूल खोलने की बड़ी इच्छा थी. पर साधन के बिना साध्य कहां मिलता है? उसका अपना घर तो था, जहां वह स्कूल खोल सकती पर बाकी के खर्चे का इंतजाम कैसे करें?

जहां चाह होती है, वहां कोई न कोई राह निकल ही आती है. बारहवीं पास करने के दो साल बाद बिमला को विकलांग कोटे से शिक्षाकर्मी की नौकरी मिल गई. अब तो आय का एक नियमित स्रोत बन गया. अब बिमला के सपनों को पंख मिल गये. निःशक्तों के लिए स्कूल का सपना आकार लेने लगा. कभी वह सोचती पंचराम निःशक्त विद्यालय नाम रखेगी अपने स्कूल का, कभी सोचती मां के नाम से चैती निःशक्त विद्यालय खोलेगी.

उसे नौकरी लगे एक साल हो गया. एक दिन टी.वी.देखते हुए बिमला को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर के बारे में जानकारी मिली. जहां पोलियोग्रस्त लोगों को चलने-फिरने लायक बना दिया जाता है. उसने वहां अपने लकवाग्रस्त पैरों की फोटो भेजी. उनसे पत्र व्यवहार किया. उसके मन में आशा की किरण जागी. अभी तक वह जमीन पर रेंगकर, घिसटते हुए ही चलती थी. अब बैसाखी के सहारे अपने पांवों पर चल सकेगी.

अपने भाई को बुलवाकर वह उसके साथ उदयपुर चली गई. वहां उसके पैरों की जांच हुई, आपरेशन हुआ. उसे ठीक होने में नौ माह का लम्बा समय लगा. उस अस्पताल में निःशक्तों के आपरेशन, भोजन दवा आदि का खर्च समाजसेवी संस्थाएं एवं दानदाता उठाते हैं. आज वह नकली पैर और बैशाखी की सहायता से खुद खड़ी होकर चलने लायक हो गई हैं.

बिमला की खुशी का ठिकाना न था. उसने उदयपुर में संकल्प लिया कि अपने क्षेत्र के पोलियोग्रस्त लोगों के लिए इस संस्था से जुड़कर समन्वयक का कार्य करेगी. जो उसकी तरह घिसट-घिसट कर रेंग रहे हैं. उन्हें अपने पांवों में खड़ा होने लायक बनने का हौसला देगी.

विमला जब उदयपुर से लौटकर आई तो अपने साथ आत्मविश्वास की चमक और संकल्प की शक्ति लेकर आई. कई औद्योगिक संस्थानों, समाज सेवी संस्थाओं से सम्पर्क करके अपने निःशक्त विद्यालय के लिए दान की राशि जमा करने में जुट गई. अपने वेतन की ४५ प्रतिशत राशि भी वह अलग जमा करने लगी. बचपन से गरीबी में पली बिमला कम पैसों में गुजाराकर लेती. दस वर्ष के बाद 'चैती बाई निःशक्त विद्यालय' खोलने का सपना साकार हुआ. कलेक्टर साहब के हाथों उद्घाटन सम्भव हुआ. उन्होंने हर सम्भव सहायता देने का वचन दिया. मात्र १० छात्रों से विद्यालय की शुरुआत हुई. अब १०० छात्र वहां शिक्षा ले रहे हैं. साथ ही साथ आर्थिक आत्मनिर्भर बनने के लिए मोमबत्ती बनाना, चाक बनाना, लिफाफे बनाना, दोना पत्तल बनाने का काम भी सीख रहे हैं. कई स्वयं सेवी अर्द्ध सरकारी, सरकारी संस्थाओं से आर्थिक सहायता मिलने लगी हैं.

बिमला को छत्तीसगढ़ के स्थापना के दिवस के अवसर पर राज्यपाल के द्वारा पुरस्कृत किया गया. जिसकी तस्वीर देख लगा आज एक छात्रा की जिन्दगी संवारने में उसका जो आंतरिक जुड़ाव था, वह सार्थक हो गया. सकलांग ५ संताने जो पंचराम के बुढ़ापे और बीमारी में उसके काम न आये और एक अपाहिज उपेक्षित बिमला जो न केवल वृद्ध माता-पिता के बुढ़ापे की लाठी बनी, वरन् बरसों तक उनका नाम अमर कर गई. गर्व से उनका सीना चौड़ा कर गई. यह सिद्ध कर दिया कि बेटियों से भी कुल का नाम रोशन होता है.

कहानी

अहिन्दी भाषी रचनाकार

गर्दन

श्री हरिहर चौधरी,
गंजाम, ओड़िसा

सर, जरा सुनिए...! हांफते हुए एक युवा छात्रा पीछे से बुला रही थी. पाठागार से निकलते वक्त घूमते हुए मैंने देखा कि एक आधा पहचाने मुंह से मुस्कुराहट फैल गयी! लंबी गर्दन झूक गयी प्रणाम जताने. उसकी गर्दन के बीचों बीच जग मगा रही थी मांसल एक तिल चिहन पर सुनहली किरण! सुंदर एक सोने के हार से रोशनी फेला रहा था रत्न जड़ित एक पदक. युवा छात्रा ने कहा, 'सर, इतने सालों के बाद मुलाकात हुई! आप तो मुझे कटक में हिन्दी पढ़ा रहे थे, याद है न. ...? शायद भूल गये होंगे इस बेचारी 'टुकनी' को....!

अचरज में मेरा होंठ हिल गया, 'टु...क....नी....! हां, तुम वही लड़की हो, जो सिनेमा के हिट सूर लेकर देशात्मबोध गीत लिखती और गाती थी?'

सर, याद की डॉब्टबीन में धन्य हुई. हां, साहित्य सेवा के लिए आप का आशीर्वाद ही आज अचानक मुझे आपके साथ मिलवा दिया.

अच्छा देखो टुकनी, अभी मेरा कॉलेज है. मुझे जाना है. खैर, तुम यहां कैसे?

सर, पिताजी रिटायर होने के बाद यहां ब्रह्मपुर में बस गये. दरअसल बात यह है कि कई हाथ लिखी कहानियों का संशोधन, द्विगदर्शन चाहती हूं. इसीलिए आपका ठिकाना....?

'हां, हां....रविवार के दिन जरुर आना. यहां गांधी नगर, दूसरी गली.

++++++++++

ठीक अगले रविवार के दिन टुकनी आकर प्रणाम जताई. गृहिणी भी उसे पहचान कर पास बिठाई. आंदोलित जेबर के साथ उसके तिल चिहन को देखकर गृहिणी पूछी, 'गल बंदनी' तो तेरे तिल चिन्ह को पहचानने में दिक्कत नहीं की बेटी!

हां मौसी, मंगनी हो गयी है. लड़का जो अभी नौकरी में तैनात हुए हैं.

सच? अच्छा, भोज कब मिलेगा...?

जरुर मिलेगा, तीन महीनों के बाद मौसी...!

उनके कथा सूत्र में मुसीबत डाल के मैंने ही कहा, 'टुकनी, पांडुलिपि लाई हो?'

सर, निकालती हूं,...शीर्षकः गरीब की बेटी!'

++++++++++++++++++++

पांडुलिपि सुनने के बाद मैंने मंतव्य दिया, 'हां' तन्हाई के भीतर यह जो कहानी मथित हुई है, इसी से आंसू बहने का उपक्रम भी होता है. चलती ग्रामीण भावा मुहावरे-कहावतों का उचित प्रयोग, दहेज-शिकार औरत का जीवन तथा उसके जीवन में मूल्यबोध खो जाने से लेखिका की व्यावहारिक चिंता तथा सुझाव, कुल मिलाकर ये सब चमत्कार है टुकनी...! कहानी अच्छी है! लिखते चलो. अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों को ऐसे ही स्वदेश प्रेम का नजीर आज दिखाना है ताकि हमारा बहुभाषी देश मानसिक स्तर में एक हो जाएगा!

++++++++++++++++++++

और एक दिन टुकनी तिल चिह्नि ग्रीवा नंवा कर पांडुलिपि के साथ आई पर वह विषणी थी. लेकिन कहानी पढ़ते वक्त आत्महरा हो जाती थी. खास कर मेरी समीक्षा, मतामत, सुझाव से प्रभावित होकर वह प्रोत्साहित हो जाती, 'विष फल' कहानी पढ़ते वक्त फिर टपका रही थी अविरत आंसू! मैंने चौंकती नजर में आधा रख दी कहानी. गृहिणी ने आखिर पूछा, 'बेटी, तेरा क्या हो गया मां......?'

आंसू पोछती हुई बातें भुलाा कर उसने कहा, कुछ नहीं मौसी, यों ही आजकल लड़किया दुनिया की मेहरबानी से ही गुजरती है. आज भी दुल्हन का बाप दहेज का शहीद है! अधुरी कहानी फिर पठित और आलोचित हुई. सांध य अंधकार को आलोकित करके तिलांकिता टुकनी की ग्रीवा झूक गयी विदाय के लिए.....!

++++++++++++++++++++

'बंधन' कहानी को पढ़ने के बाद प्रगलभा नव्य साहित्यिका टुकनी कह रही थी, 'सर, इन लड़कियों की गर्दन है सिर्फ पगहा (रस्सी) बांधने के लिए. ...न कि मुक्त-गर्दन में एलान करने आजादी का पैगाम....' इसके बारे में कृपया कुछ तो बताइये न सर....!'

भारतीय शांति है इसमें बेटी! ठण्ढे मिजाज में सोचना हमारा धर्म है. फिर भी उस बंधन का नामांतर 'पगहा' न हो...दो दिलों की आपसी अमृत-श्रृंखल' कह सकती हो उसे!

दूसरे दिन मुरझायी ग्रीवा से प्रणाम जता कर उसने शुरु की, 'अभागिन' कहानी दरअसल उस दिन वही मांसल गोल तिल चिन्ह सुनहरी किरण से वंचित था! हमारी प्रश्नवाची मुद्रा को छुटकारा दिलाकर कह रही थी टुकनी, 'हां, सर, 'अभागिन' कहानी की नायिका की तरह मेरी भी किस्मत फूट गयी! अवश्य आज उस मंगनी-निशाने को बेबुनियाद वे लौटा लिए! क्योंकि वे एक जन बहुत पढ़े लिखे गुमास्ता हैं. शादी

के तराजू में वजनदार भी....! लेकिन हमारे खरीदने की ताकत तो सीमित है! फिर भी सर आप जरुर देखेंगे कि इसी से मैं कभी कमजोर नहीं हो जाऊं...! टूट नहीं जाऊंगी. फर्ज की राह से मैं फिसल नहीं जाऊंगी. अपनी सृजनशीलता ऐसे ही ठोकर खाकर कभी कांकड़ कठिन नहीं बनेगी! अवश्य गर्दन बंधनी' का छाप सिर्फ चंद दिनों के लिए अमिट रह जाएगा ही!

दिलासा देते हुए अध पढ़ी कहानी को मैंने मेज पर रख दिया.

++++++++++++++++++++

एक माह के बाद....और एक दिन की बात है. मैं निमंत्रित होकर आया था पूर्वोक्त उस पाठागार के वार्षिक सारस्वत समावेश को... मुख्य वक्ता की हैसियत से' आज की मुसीबतें भरी जिंदगी और कहानी' शीर्षक पर भाषण देकर कार्यक्रम के उपरांत लौट रहा था. शहर के वस्ती इलाके से गुजर कर...रास्ते में देखने को मिला एक दंगा-फिसाद. फिर सुनने को मिला अति परिचित एक नाम के साथ उसका गहरा संबंध. दिल चुभ गया. कोतूहल में घटना पर मेरे पैर हाजिर हो गये.

शिशुपाल की तरह एक तरफा एक प्रेमी एक झोपड़ी-काटेज के खंभे से शक्त बंधा हुआ था! तुर्रा यह है कि शादी शुदा होते हुए भी पहली अवहेलिता वाग्दता क्वारी लड़की को फंसाने का दंड वह भुगत रहा था! नाम मात्र काटेज की उस युवा-मालकिन, अपांक्तेया वाग्दूता की हुक्म को कामयाब करके बगले बजाते थे काटेज के दो जन तंदुरुस्त आधा पढ़ कर्मचारी, लेकिन काटेज में श्याम की लालटेन की धीमी रोशनी मालकिन की दीर्घ ग्रीवा के तिल चिन्ह को छाया लोक में आंख मिचौली खेलती थी! उसकी गर्दन पर दाग लगाने वाले हार की छांह उस वक्त मिट गयी थी.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक/ पंचवर्षीय/आजीवन/संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/बैंक ड्राफ्ट/ पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.

अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें

नाम :..

पिता/पति का नाम :..

पता :..

डाकखाना :..जनपद...

राज्य :..पिन कोड...

दूरभाष/मो0..ईमेलः..

विशेष नियमः

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें

03 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे विजया बैंक के खाता क्रमांकः 718200300000104,
आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): VIJB0007182
यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259
आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875
में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है। विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रतिः	रु0 10/–	रु055/
वार्षिक	रु0 110/–	रु0600/
पॉच वर्ष :	रु0 500/–	रु0700/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	रु05870/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	रु026700/

पराशक्ति योग

श्री कृष्ण गोयल, दिल्ली

अहंकार मनुष्य को परमात्मा से जुदा करता है तथा सीमित करता है. इसके परिणामस्वरुप मनुष्य के भीतर मैं तथा मेरेपन की भावना उत्पन्न होती है तथा मनुष्य अपनी निम्न इच्छाओं के अधीन होकर अपना जीवन व्यर्थ गंवा देता है. शान्ति, आनन्द, सुख आदि के लिए बाहर की ओर दौड़ता है परन्तु उसे स्थायी आनंद, शांति, प्रेम, शक्ति आदि प्राप्त नहीं होते. वह जीवन की घटनाओं तथा व्यक्तियों के व्यवहार का गुलाम बनकर अपने जीवन में सुख-दुख के झूलने में झूलता रहता है. इस प्रकार वह दुख, कष्ट, बीमारी, बूढ़ापे तथा मृत्यु का शिकार बना रहता है. जब तक मनुष्य अपरा प्रकृति (शक्ति) के अधीन रहेगा, उसकी ऐसी ही दयनीय स्थिति रहेगी, चाहे वह कितनी ही भौतिक उन्नति कर ले तथा बड़े से बड़े पर पद आसीन हो जाए.

परमात्मा से युक्त होकर दिव्यगुण, ज्ञान, शक्ति आदि प्राप्त किए जा सकते है तथा अपने जीवन को दिव्य बनाकर अपने कर्म तथा व्यवहार द्वारा मानवता की सर्वागीण प्रगति के लिए योगदान प्रदान किया जा सकता है, यह ही मनुष्य जीवन का परम कर्त्तव्य तथा सर्वश्रेष्ठ धर्म है.

केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो कि परमात्मा से सदा संयुक्त होकर अपने जीवन को दिव्य बनाकर दिव्यता को प्रसारित कर सकता है. वर्तमान संदर्भ में वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरुप, प्रबुद्ध वर्ग का झुकाव योग की तरफ हुआ है जो कि उज्जवल दिव्य भविष्य का संकेतक है.

परमात्मा से संयुक्त होने पर मनुष्य की समस्त सीमाएं टूट जाती है, वह असीम से एकाकार करता हुआ निरन्तर सर्वागीण प्रगति के पथ पर गतिशील रहता है. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उसके नियन्त्रण में आ जाते है तथा उसमें स्थिर घनीभूत शान्ति, दिव्ययुग, मौलिक ज्ञान, असीम शक्ति, शुद्ध प्रेम आदि दैवी सम्पदाओं का प्रतिपल निरन्तर सम्बर्धन होता है. ऐसा दिव्य पुरुष परमात्मा का अभिन्न अंग बनकर देवदूत की भांति हर समय मानवता के उत्थान के लिए क्रियाशील रहता है. उसमें असीम दिव्य शक्ति होती है, वह काम करते हुए थकता ही नहीं. परमात्मा की पराशक्ति उसमें निरन्तर असीम मात्रा में कार्य करती है तथा उसमें मानवता को रूपांतरित करते की क्षमता होती है. ऐसा होना कठिन नहीं है अपितु बहुत सरल है, केवल आवश्यकता है संपूर्ण विश्वास, श्रद्धा तथा दृढ़ संकल्प एवं प्रार्थना के द्वारा परमात्मा से संयुक्त होकर उसमें दिव्य गुण ज्ञान तथा शक्ति प्राप्त की जाए. परम पिता प्रभु की अपार कृपा से धरती पर परा प्रकृति का साम्राज्य स्थापित हो चुका है. जिसके परिणाम स्वरुप एक ऐसा दिव्य सतूयुग प्रारंभ होने जा रहा है जो कि निरन्तर बृद्धिशील होगा तथा सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग की प्रचलित प्रणाली समाप्त हो जाएगी. धरती दिव्य होगी, जीवन दिव्य होगा तथा शरीर दिव्य होगा. कहने का भाव यह है कि मनुष्यों का निम्न इच्छाओं पर नियंत्रण होगा, अहंकार, स्वार्थ तथा आसक्ति विदा हो जाएंगें. मनुष्यों में परम शान्ति, आन्तरिक आनंद, सभी से प्रेम एवं अपनेपन की भावना, असीम दिव्य शक्ति, मौलिक ज्ञान आदि होंगें तथा सब प्रकार के दुःख, बीमारी, बुढ़ापा तथा मृत्यु समाप्त हो जाएंगें. धरती समस्त लोकों से उत्तम होगी तथा मनुष्य से परम देव होगी. ऐसा होना सुनिश्चित है, कृपया संपूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से इस लेख में वर्णित ध्यान की विधियों का अधिक से अधिक अभ्यास करें जानकारी हेतु कुछ मुख्य संकेत दिए जा रहे हैः-

० मनुष्य देवों का देव है, परा शक्ति के द्वारा अपने परम तत्व को जागृत करके निरन्तर प्रगति की जाए. व्यर्थ के चक्करों से जैसे ज्योतिष, वास्तुशास्त्र आदि से बचा जाए. पराशक्ति के ध्यान के द्वारा मनुष्य ग्रहों से ऊपर उठ सकता है तथा अपने भाग्य को भी बदल सकता है, जबकि ज्योतिष में भाग्य परिवर्तन का कोई प्रावधान नहीं है.

० पराशक्ति से भीतर से आनंद की प्राप्ति होगी, सेक्स पर संयम आएगा. वेश्यावृत्ति को समाप्त किया जा सकता है.

० उन तत्वों से सावधान रहें जो किसी प्रकार का भेदभाव उत्पन्न करते है.

० परमात्मा से अपने लिए कुछ न मांगें. केवल यही प्रार्थना करें तो आपका जीवन दिव्य हो तथा आपमें दिव्यता प्रसारित करने की क्षमता आए.

स्थिर घनीभूत शान्तिः-अपनी आंखों को धीमें से मूंद ले, परमात्मा से प्रार्थना करें कि आपका जीवन दिव्य हो तथा अपने मन में पूरी शक्ति से तीन बार शान्ति कहें. उसके उपरान्त ऐसा महसूस करें कि सिर से लेकर गर्दन तक का भाग स्थिर शान्ति की पत्थर की प्रतिमा बन गया हैं. इस स्थिति में दस मिनट रहें

एकाग्रताः-ध्यान के उपरान्त एकाग्रता का स्थान है. एकाग्रता द्वारा मनुष्य को आत्मा का बोध प्राप्त होता है तथा परम शान्ति आनंद का लाभ होता है.

अमृतवर्षा का ध्यानः-अपनी आंखे मूंद ले, अपना सिर ऊपर ले जायें तथा महसूस करें कि आकश से अमृत की वर्षा हो रही है, आप उसमें स्नान कर रहे है, आप अमृतमय हो जायेगें.

जय हिन्द जय हिन्दी जय हिन्द जय हिन्दी

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःsahityaseva@rediffmail.com

हमारे उद्देश्य

हिन्दी का प्रचार प्रसार करना

हिन्दी प्रेमियों/समाज सेवियो/कलाकारों को सम्मानित करना

काव्य गोष्ठी, परिचर्चा, पुस्तक–प्रदर्शनी, लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

स्नेहाश्रम

(हिन्दी विश्वविद्यालय, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, पुस्तकालय, गौशाला, चिकित्सालय, स्नेह मंदिर का निर्माण)

महोदय,
मैं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान का साधारण/स्थायी/आजीवन/संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/बैंक ड्राफ्ट/ पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.
अतः मेरा सदस्यता प्रमाण–पत्र निम्न पते पर भेजें
नाम :...
पिता/पति का नाम :..जन्म तिथिः...
पता :...
डाकखानाः...................................जनपद............................राज्य :...............................पिन कोड.........................
दूरभाष/मो0...ईमेलः..
शैक्षणिक योग्यता :..
अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़े हो...
आप हिन्दी/समाज की किस प्रकार सेवा करना चाहते है..

विशेष नियमः हस्ताक्षर

01 कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि रखता हो, समाज सेवा में रुचि हो। सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए. कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें

02 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259, आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875 **विजया बैंक** के खाता क्रमांकः 718201010002173 आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): VIJB0007182 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

03 संस्थान के प्रकाशनों में 50 प्रतिशत की छूट

04 सरंक्षक सदस्यों का नाम बैनरों, पैड में अंकित किया जाएगा.

	सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
01	साधारण	रु0 50/–	रु0250/
02	स्थायी	रु0 200/–	रु01000/
03	आजीवन	रु0 1100/–	रु05500/
04	संरक्षक	रु0 5001/–	रु025000/
05	बाल्य	रु0 10/–रुपये	रु0 50/–

स्नेह बाल मंच

बच्चों ने प्रस्तुत किए मनोहारी कार्यक्रम

वैसे तो लगभग सभी विद्यालयों में वार्षिकोत्सव होते ही रहते हैं. कुछ में प्रत्येक वर्ष तो कुछ में दो-तीन वर्षो के अंतराल पर. वर्तमान में ज्यादा तर विद्यालयों में या तो फिल्मी गानों पर नृत्य(फिल्मों की नकल करके), एलबमों से लोकनृत्य व नाटक के रुप में वही घिसे पिटे विषय व प्रस्तुती देखने को मिलती है. लेकिन इनमें अगर नवीनता हो तो कार्यक्रम की शोभा, रोचकता देखते ही बनती है. कुछ ऐसी ही नवीनता, रोचकता, रमणीयता आलम निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, नैनी, इलाहाबाद के वार्षिकोत्सव में देखने को मिले. कार्यक्रमों के ज्यादातर विषय नवीन थे, उनका प्रस्तुतीकरण नवीन था, पहनावा नवीन था. बच्चों के प्रस्तुतीकरण को देखकर यह आभास हो रहा था कि वास्तव में इनके साथ एक लम्बा युद्धाभ्यास किया गया है. बच्चों के अंदर की प्रतिभाओं निखारने का काम वास्तव में कुशल पारखियों के द्वारा निश्चय ही किया गया होगा. भरत नाट्यम, डांडिया, भारत वंदना, कठपुतली, कौव्वाली, नाटक आदि कार्यक्रमों ने मन को आहलादित कर दिया.

छोटे-छोटे बच्चों ने बहुत ही अच्छे तरीके से अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया. सुन्दर सलोने रूप में बच्चों की नाट्य प्रस्तुति यह दर्शाती है कि विद्यालय परिवार ने काफी मेहनत की है. इसके लिए विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी बधाई की पात्र है' उक्त बातें निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित उप पुलिस अधीक्षक, करछना डॉ. ए.एन.सिंह ने कही.

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण से शुरु हुआ तत्पश्चात बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया. अतिथियों का स्वागत विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी ने किया.

विभिन्न कार्यक्रमों में स्नेहा, श्वेता, मनीषा, आकांक्षा, कृति ने सहभागिता निभाई. डफली में आयुष, तनिष्ठा, प्रियाशूं, भरतनाट्यम में आंचल, सृष्टि सिंह, सृष्टि मिश्रा, ज्योति, आरोही, कठपुतली में रोशन, अर्चना, शाहीन, आशूतोष, रजत, कव्वाली मे रोहित, पंकज, अंकित, डांडिया में जागृति, प्रेरणा, आरती, नीत, आंचल गोस्वामी ने रमणीय प्रस्तुति दी.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एयरपोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया के उप महाप्रबंधाक श्री दुर्गा प्रसाद उपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि कोई भी विषय कठिन नहीं होता है. अगर अक्षर का ज्ञान हो जाए तो वह कोई भी साहित्य पढ़ सकता है. बच्चे हमारे देश के भविष्य है. आज इस आयोजन में बच्चों ने दिखाया कि हमारे देश के भविष्य हैं. आज इस आयोजन में

बच्चों ने दिखाया कि वाकई सच्ची लगन से कुछ भी हासिल किया जा सकता है. विद्यालय के सभी शिक्षिकाएं बधाई की पात्र है जो इतने मनोहारी व रमणीय कार्यक्रम तैयार कराये, विशेष रुप से शिखा गिरि.

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध यक्षता कर रहे श्री डी.पी.उपाध्याय ने विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विभिन्न कक्षाओं के छात्रों को मेडल व ट्राफियां प्रदान की. अतिथियों का आभार विद्यालय के प्रबंधक राजकिशोर भारती ने व्यक्त किया.

किसी कार्यक्रम की सफलता में उदघोषक की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है. कार्यक्रम चाहें जितना अच्छा हो अगर उदघोषक सही नहीं है तो अच्छे से अच्छा प्रोग्राम पिट जाता है और अगर उदघोषक अच्छा है तो पिटता हुआ कार्यक्रम भी चमक जाता है और अगर कार्यक्रम भी अच्छा हो, और उदघोषक भी अच्छा हो तो सोने पे सुहागा. सब रंग चोखा ही चोखा. उपरोक्त कार्यक्रम में उदघोषक की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही श्रीमती सपना गोस्वामी ने अपनी वाकपटुता, उदघोषण कलाओं से जो समा बांधा वह वाकई काबिले तारीफ था. अपनी सुरीली वाणी व शब्दों के जाल से ऐसी समा बांधी कार्यक्रम के बीच का गैप भी कार्यक्रम का ही हिस्सा नजर आया. बच्चों के सुंदर प्रस्तुती को निखारने, संजाने सवांरने में श्रीमती शिखा भारती ने अपनी कला प्रदर्शन किया.

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. किशोरी लाल, सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक, म.प्र. डॉ. पन्ना लाल, सेवानिवृत्त बेसिक शिक्षा अधिकारी आनंद शेखर गिरी, पूर्व उप नगर प्रमुख मुरारी लाल अग्रवाल, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल, विश्व स्नेह समाज की प्रबंध संपादिका श्रीमती जया द्विवेदी, सी.आर.पी.एफ. इलाहाबाद के मेडिकल आफिसर अनिल भारती आशुतोष केसरवानी, प्रेमलता श्रीवास्तव, उमा दुबे, श्रीमती पुष्पा जोशी, मीना त्रिपाठी, बृजेश जोशी, मीना सिंह, जय प्रकाश मालवीय इत्यादि गणमान्य नागरिकों ने कार्यक्रम की रमणयीता का भरपूर आनंद लिया और अपनी तालियों से बच्चों को उत्साह बर्धन किया.

विद्यालय परिवार की तरफ से रवि प्रकाश द्विवेदी, मोहित गोस्वामी, अर्चना भारती, श्रीमती प्रभा द्विवेदी, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, अर्चना सिंह, आशा सिंह आदि ने सहयोग प्रदान किया.

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. **अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखें:**

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

अच्छे बीजों की तरह जरुरी है अच्छे विचारों का चुनाव भी

✍सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही चारों ओर हरियाली छा जाती है तो वसंत ऋतु में रंगों की बहार नज़र आती है. जिधर देखो रंग-बिरंगे फूल ही फूल नज़र आते हैं. अब ज़रा विचार कीजिए क्या वर्षा ऋतु के कारण हरियाली छा जाती है अथवा वसंत ऋतु के कारण ही फूल खिल उठते हैं? यह ठीक है कि वर्षा ऋतु में चारों ओर हरियाली छाती है ग्रीष्म ऋतु में नहीं तथा वसंत ऋतु में ज़्यादा फूल खिलते हैं सर्दी या बरसात में नहीं लेकिन हरियाली और फूलों के खिलने का मूल कारण क्या है? इसका मूल कारण है वनस्पतियों और पौधों का उगना. जब तक धरती के गर्भ में बीज नहीं होंगे न वनस्पतियाँ ही उगेंगी और न फूलों के पौधे या दूसरे वृक्ष ही.

जिस प्रकार वृक्ष के उगने के लिए बीज अनिवार्य है उसी प्रकार हर कार्य के मूल में भी एक बीज होता है और वह है विचार. जैसा बीज वैसा पौधा तथा जैसा विचार वैसा कर्म. विचारों का बड़ा महत्व है, जैसे कर्म वैसा जीवन. विचार ही हमारे जीवन की दशा और दिशा निर्धारित करते हैं.

वर्षा ऋतु में वर्षा के उपरांत अंकुरण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ होते ही बीज अपने आप उगने लगते हैं लेकिन वसंत ऋतु में स्थिति कुछ भिन्न होती है. वसंत ऋतु में प्राकृतिक रूप से ही नहीं मनुष्य द्वारा बोए गए बीजों से उत्पन्न पौधों पर भी फूल खिलते हैं और मनुष्य अपनी पसंद की खुशबू और आकर्षक रंगों के फूलों के पौधों के बीज ही बोता है. जिस प्रकार अपनी पसंद के सुन्दर फूलों के पौधों के बीज बोना संभव है उसी प्रकार अच्छे जीवन के निर्माण और विकास के लिए अच्छे कर्म करना और अच्छे कर्म करने के लिए अच्छे विचारों का विकास करना भी संभव है.

विचारों का उद्गम स्थल है हमारा मन अतः मन पर नियंत्रण द्वारा हम ग़लत विचारों पर रोक लगा सकते हैं तथा अच्छे विचारों से मन को आप्लावित कर सकते हैं। यदि जीवन रूपी बगिया को सुंदर बनाना है, उसे रंगों से सराबोर करना है तथा उसे भीनी-भीनी गंध से गमकाना है तो मन रूपी बगिया में चुन-चुन कर अच्छे विचार बीजों को बोइए, सकारात्मक सोच के पौधे लगाइए।

प्रायः कहा जाता है कि पुरुशार्थ से ही कार्य सिद्ध होते हैं मन की इच्छा से नहीं। बिल्कुल ठीक बात है लेकिन मनुश्य पुरुशार्थ कब करता है और किसे कहते हैं पुरुशार्थ? पहली बात तो यह है कि मन की इच्छा के बिना पुरुशार्थ भी असंभव है। मनुश्य में पुरुशार्थ या हिम्मत अथवा प्रयास करने की इच्छा भी किसी न किसी भाव से ही उत्पन्न होती है और सभी भाव मन द्वारा उत्पन्न तथा संचालित होते हैं। अतः मन की उचित दषा अथवा सकारात्मक विचार ही पुरुशार्थ को संभव बनाता है। पुरुशार्थ के लिए उत्प्रेरक तत्त्व मन ही है।

कई व्यक्ति तथाकथित पुरुशार्थ तो करते हैं लेकिन फिर भी सफलता से कोसों दूर रहते हैं। एक श्रमिक कितना परिश्रम करता है लेकिन क्या उसका परिश्रम या पुरुशार्थ अपेक्षित कार्य-सिद्धि प्रदान कर पाता है? कार्य-सिद्धि अथवा सफलता या लक्ष्य-प्राप्ति पूर्ण रूप से पुरुशार्थ पर नहीं मन की इच्छा पर निर्भर हैं। कालिदास करते हैः 'नास्त्यगतिर्मनोरथानां' अर्थात् मनोरथ के लिए कुछ भी अगम्य नहीं है। इच्छाएँ ही हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं, सफलता प्रदान करने में सहायक होती हैं लेकिन संतुलित सकारात्मक इच्छाएँ क्योंकि जैसी इच्छा वैसा परिणाम।

कहते हैं कि पारस पत्थर लोहे को सोना बना देता है। पारस पत्थर किसी ने देखा नहीं सिर्फ किस्से सुने हैं पारस पत्थर के। पारस पत्थर प्रतीक है अपरिमित लाभ के स्रोत का। यह एक मुहावरा बन गया है। किसी के लिए कोई व्यापार पारस पत्थर सिद्ध होता है तो किसी के लिए दूसरी वषत्ति। वस्तुतः सबसे महत्वपूर्ण पारस पत्थर है मनुश्य का मन। मन रूपी पारस पत्थर को छुआने के लिए सकारात्मक विचार रूपी लोहे की आष्यकता होती है तभी वह सोना बनता है अर्थात् अपरिमित लाभ का कारण बनता है।

मन को किसी सकारात्मक उपयोगी विचार से ओतप्रोत कर लो तो उससे असीमित लाभ संभव है। जैसा विचार वैसा लाभ। सुख-दुख की अनुभूतियाँ मन में उत्पन्न विचार की ही देन है। स्वास्थ्य विशयक सकारात्मक विचार स्वास्थ्य तथा आरोग्य प्रदान करेंगे तथा समषद्धि के प्रति विष्वास से ओतप्रोत विचार समषद्धि देंगे। कुछ लोग केवल भौतिक सुख और आर्थिक समषद्धि चाहते हैं। उनको ये सब मिलता भी है लेकिन वास्तविक सुख और संतुश्टि नहीं। यदि जीवन में संतोश की कामना करोगे तो संतोश भी मिलेगा और संतुश्टि के सामने मात्र भौतिक सुख और समषद्धि कोई मायने नहीं रखते। अतः मन को संतुलित सकारात्मक विचारों से ओतप्रोत रखना ही श्रेयस्कर है और यही अभीष्ट भी।

नारी का अपमान:भावी पीढी के साथ अन्याय

- पुरुष शरीर शौर्य का प्रतीक है. नारी शरीर ममता का प्रतीक है.
- यदि नाभि को नारी नुमायश का माध्यम बनाएगी तो गर्भस्थ शिशु कभी प्राणवान, निरोग, वीर्यवान, आयुष्य को प्राप्त नहीं होगा.
- याद रखिए वहीं मां ममतामयी होती है जो सच्चरित्र एवं मर्यादित होगी.

✍रेणु सूद, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

आज के युग ने मर्यादा, लज्जा जैसे दिव्य गुणों की बहुत अवहेलना की है. नारी शरीर लज्जा निर्मित है, मर्यादा से पोषित है. ऐसा क्यों है? क्योंकि नारी जननी है. नारी का शरीर पुरुष की अपेक्षा सुकोमल एवं सुन्दर होता है. आज का बाजार युग नारी शरीर की महिमा नहीं जानता. इसलिए उसके शरीर की नीलामी की जा रही है. अमर्यादा एवं निर्लज्जता का साम्राज्य हो गया है. महत्वाकांक्षी औरतें अपने अंगो को उघाड़ कर उनकी नीलामी करने पर तुली है. उन्हें यश, मान, शोहरत मिलती देख कर पूरा समाज इनका पिछलग्गू बनता चला जा रहा है. आज बिना बांहो के कपड़े पहनना, गला उघाड़ कर वक्षस्थल दिखाना, कमर के नीचे जीन्स पहन कर नाभि दिखाना, साड़ी इस तरीके से पहनना कि 'सेक्स अपील' लगे, आज का फैशन बन चुका है.

इसका कारण अज्ञान है. यदि पुरुष का वक्ष वस्त्रहीन हो तो कभी ग्लानि नहीं होती, लेकिन नारी शरीर को इस अवस्था में देख कर मन वितृष्णा से भर उठता है. इसका वैज्ञानिक पक्ष समझें. पुरुष शरीर शौर्य का प्रतीक है. नारी शरीर ममता का प्रतीक है. उसके वक्षस्थल पर उसकी जन्म लेने वाली सन्तान का अधिकार

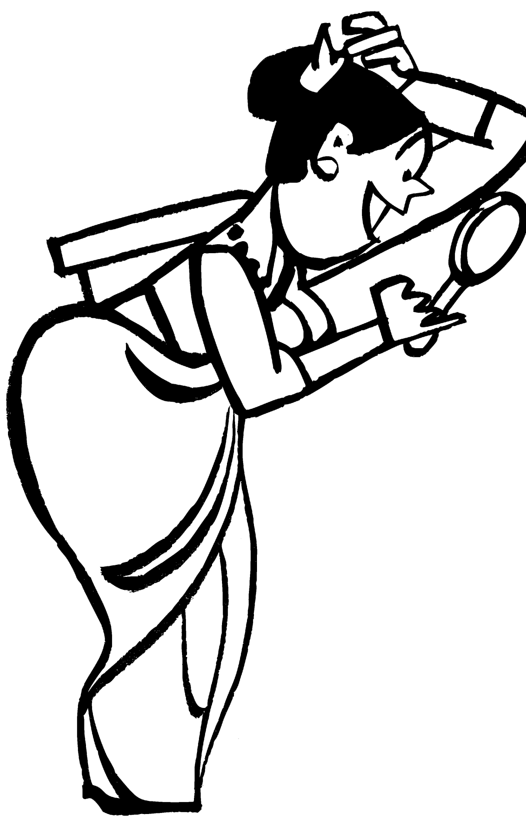

है. वह उसके स्तन का अमृत पीकर पुष्ट होती है. गर्भस्थ संतान को भारतीय धर्म 'ऋषि' की संज्ञा देता आया है. अतः शरीर की गरिमा रखना अनिवार्य है. यदि नारी शरीर की गरिमा न रखे, न समझे, तो वह भूल जाए कि उसके कोई सुसंतान जन्मेगी. इसी प्रकार नारी की नाभि का महत्व है. उसकी नाभि से गर्भस्थ शिशु की नाभि का जुड़ाव होता है. यह नाभि शरीर का सूर्य है. 'सूंय' से सूर्य खुराक लेता है एवं प्राणवान होता है. यदि नाभि को नारी नुमायश का माध्यम बनाएगी तो गर्भस्थ शिशु कभी प्राणवान, निरोग, वीर्यवान, आयुष्य को प्राप्त नहीं होगा. क्यों? क्योंकि ऋषि आत्मा 'संस्कृति' की पुजारिन है. ऐसा सभ्य आचरण गर्भावस्था के दौरान रखना अनिवार्य नहीं, यह आवश्यकता अविवाहित लड़की से वांछित है. कारण? जैसा आपका चिंतन चरित्र होगा, वैसी ही आत्मा गर्भ में प्रवेश करेगी. यहां चेतना का महत्व है. चेतना सब जानती है. दिव्य आत्माएं उसी मां का शरीर चुनती है जो चरित्रवान हों. याद रखिए वहीं मां ममतामयी होती है जो सच्चरित्र एवं मर्यादित होगी.

स्पष्ट है कि नारी शरीर का अपमान आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय है. समाज, देश के साथ अन्याय है. नारी शक्ति का अपमान राष्ट्रघाती है विश्वविनाशक है. अंगप्रर्दशन बदसूरती का द्योतक है. जो नारी सरल सौम्य नहीं वह कदापि सुन्दर नहीं कही जा सकती. उसके नखशिख की बनावट कतई सुन्दरता से सम्बन्ध नहीं रखती. उसकी सुन्दरता उसके आत्मविश्वास से भरी आंखों में है. उसकी स्पष्ट मधुर वाणी उसकी सुन्दरता में चार चांद लगाती है. उसकी

युवा रचनाकार

सैनिक

ज़न्में है इस भारत मॉ पर, कर्ज सदा सिर पे रहा है मॉ का,
इसने ही पाला और दुलारा दुख दर्द में हाथ रहा सबको मॉ का
माता के ऋण से उऋण वो ही होता है जिसने लजाया नहीं दूध मॉ
वो ही सपूत है सच्चा वसुधा का बलिदान दे मान बढ़ाया है मॉ का।
प्रतिशोध की ज्वाला लिए लड़ता है सिंह के जैसी दहाड़ लगाये
टुट कर युद्ध करे सीमा पर शत्रु को गोली से मार गिराये
लेता है लोहा अरि से वो जब तक प्राण है तब तक ना घबराये
गोली की भाषा को गोली से देकर माता के दूध का कर्ज चुकाये।
वंदेमातरम् कहकर के वो माता की गोदमें सो जाता है
देश का मान बढ़ा करके वो खुद भी अमर पद को पाता है
छोड़ गया परिवार की खुशियॉ नव व्याहित पत्नी को छोड़ गया है
छोड़ गया अपनी बूढ़ी मॉ, बाप से नाता तोड़ गया है।
पत्नी के हाथों में मेंहदी हरी थी, मेंहदी का लड्डू हथेली में ही था
हाथों के कंडे खुले भी नहीं थे, पर पति के जाने का वो डर सही था
सुहाग रात भी थी अब तक अधूरी, परमानन्द भी अधुरा ही था
छोड़ के सैज उठा झट सैनिक जज्बा देशभक्ति का उर में पला ही था.

देवकी दर्पण 'रसराज', बून्दी, राजस्थान

संचय

समय आता है समय से/समय जाता है समय से
समय मित्र नहीं किसी का/शत्रु भी नहीं किसी का
समय दीपक है जो खा जाता है जीवन
समय सोना है जो संवार जाता है जीवन
समय पर सब आता है/समय जब कुसमय बनता है
तो सबक देता है, परिणाम देता है कर्मो का
कुसमय ताप है निखारता है/समय को कुछ भी नाम दो
शनि, राहु, केतु, भाग्य आदि आदि
समय मिन्नतों से नहीं मानता
समय प्रार्थनाओं से भी नहीं पिघलता
कुसमय बनता है जब समय
राजा बना देता है
भिखारी को दाता बना देता है
समय के दो रुप सुख और दुख
तुम अपनी क्षमता से सुख-दुख से ऊपर उठ जाओ
समय नमन करेगा तुम्हें
फिर समय खेल लगेगा तुम्हें।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा, म.प्र.

मर्यादित, संतुलित चाल उसे गरिमामयी बनाती है. ये गुण ईश्वरीय प्रदत्त यानी पूर्वजन्म के कर्मानुसार नहीं, इस जन्म की साधना से बनते हैं. बस, अपने आपको हीनता से बाहर निकालिए एवं अपनी सृजनात्मक शक्ति पर गर्व कीजिए. आज बाजारवादी मानसिकता के लोग धार्मिक सीरियल बनाने की होड़ में है. वे भी नारी की सुन्दरता को नारी के सुकोमल अंगप्रदर्शन में तलाश रहे हैं. यह सर्वथा वर्जित है. स्व० रामानंद सागर ने जब 'रामायण' का निर्माण किया था, उस सीरियल से संस्कृति की सुगन्ध आती थी एवं जनसाधारण ने इसे खूब पसंद किया था. 'महाभारत' एवं 'श्रीकृष्णा' सीरियल भी भारतीय संस्कृति के अनुरुप उच्चकोटि का प्रदर्शन था.

हे नारियों! केवल तुम्हीं अपने शरीरका विज्ञान समझ सकती हो. हर नारी 'मां' बनने की अभिलाषी होती है. हर 'मां' को दीघार्यु एवं संस्कारित संतान की इच्छा होती है. यदि तुम्हें वास्तव में सुसंतान चाहिए, प्राणवान संतान चाहिए, जिस पर तुम अपनी ममता का सागर लुटा सको तो अपने श्रीर की रचना समझो. हम जो पहनते ओढ़ते है, उसका मन पर प्रभाव पड़ता है. बाद में यही प्रभाव व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है. अतः इस सम्बन्ध ा में सतर्क रहने की आवश्यकता है. पश्चिम जगत में नारी परिधान की गरिमा को नहीं समझा, इसी कारण वहां परिवार टूट रहे हैं. उनकी पीढ़ियों का ओज तेज गायब हो चुका है. नारी परिधान पुरुष परिधान से भिन्न होने चाहिए. पुरुषों की तरह चुस्त कपड़े लड़ने की प्रवृत्ति पैदा करते हैं. जबकि ढीले कपड़े शान्त एवं शालीन बने रहने के लिए प्रेरित करते हैं. नारी की सहनशीलता एवं त्याग पर गृहस्थी की नींव टिकी होती है. यदि आज पारिवारिक जीवन दरक रहा है तो इसमें कही न कहीं नारी का पहनावा भी जिम्मेवार है क्योंकि भारतीय नारी पाश्चात्य जगत का अनुसरण कर रही है.

हे नारियो! तुम समाज की रीढ़ हो. अपनी महत्ता पहचानों. देश की धुरी हो तुम! तुम स्वार्थी पुरुष समाज के हाथ का खिलौना मत बनों. स्वयं वीरता एवं सद्विचारों की साधना करो. तुम्हें स्वयं अपने आपको बचानाा है. द्रौपदी की रक्षा स्वयं उसकी सबल आत्मा ने की थी, जिसका नाम उसने 'श्रीकृष्ण' रखा था. प्रबुद्ध नारियां एवं चरित्रनिष्ठ पुरुष नारीर शरीर का बाजारवाद रोकें एवं नारी के अस्तित्व की रक्षा करें. यह प्रयास विश्वकी रक्षा से जुड़ा है. अवश्य ही विश्वपिता के अनुदान तुम पर बरसेंगे एवं तुम्हारा यश युगयुगान्तरों तक फैलेगा.

गजल

०१

पतझड़ की टूटी पत्तियां कहती है।
बहारे भी आयेंगी तू हौसला रख।।
भोर की ये लालिमा कहती है।
सुबह भी होंगी तू हौसला रख।।
बंद लवों की ये खामोशियां कहती हैं।
ये पंखुडिया भी खुलेगी तू हौसला रख।।
मंदिर की बजती घंटिया कहती हैं।
तेरी भी अर्जी पहुंचेगी तू हौसला रख।।
पीर के मजार पे बिछी हरी चादर कहती हैं।
दुआयें तेरी भी कबूल होगी तू हौंसला रख।।

०२

मशीनों के बीच रहते-रहते।
खुद रिमोट बन गया है इंसान।।
कंकरिटों के जंगल में रहते-रहते।
खुद पत्थरदिल हो गया है इंसान।।
हाईटेक युग में रहते-रहते।
प्रकृति से कितना दूर हो गया है इंसान।।
फ्लैटों की जिन्दगी जीते-जीते।
कितना अजनबी हो गया है इंसान।।
इन्टरनेट के युग में रहते-रहते।
अपने पड़ोसी से ही कट गया हैं इंसान।।

✍**अविनाश कुमार पाण्डेय,** पश्चिमी चम्पारण, बिहार

+++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

महंगाई ने आदमी को नंगा कर दिया
सारे रिश्ते-नातों को गूंगा कर दिया
हमसे पाकर वोट जनाब पा गये कुर्सी,
फिर उन्होंने हमको भिखमंगा कर दिया
इस जहां की हर चीज भी हो गई महंगी
मगर आदमी के खून को सस्ता कर दिया।
फटेहाल लोगों की बात न पूछ ए जनाब।
हालात ने उनको तो बेढ़ंगा कर दिया
नशा शराब का हो या सियासत का
हर नशे ने आदमी को अंधा कर दिया
एक पल भी नहीं रह सकते इसके बिना
कुर्सी ने नेताओं को निकम्मा कर दिया।

✍**रमेश मनोहरा,** जाबरा, म.प्र.

गीत

हारा थका हुआ मन लेकिन
मीत ढूंढता हूं।
उत्पीड़न में पली हुई हो ऐसी
प्रीत ढूंढता हूं।। मीत..
बहुत मिले तटवर्ती साथी
जो जीवन में छूट गये है
और कुछ अपनापन ले करके,
अपने आप ही रूठ गये है।
सुखद आत्मा हो वे जिससे वो
मनचीत ढूंढता हूं। मीत...
वे अनुराग करेंगे कैसे,
गये कभी न थे दुःखद्वारे।
उन्हें नेह से क्या लेना है,
जो केवल पैसों के प्यारे।
गहरा दर्द छिपा हो जिसमें,
ऐसा गीत ढूंढता हूं। मीत..

✍**हरिचरण 'वारिज',** कोटरा, भोपाल

डॉ० पाठकः व्यक्तित्व एवं कृतित्व लोकार्पित

जीन्द, 'रवीन्द्र ज्योति के समुचित उल्लेख के बिना हरियाणा की साहित्यिक पत्रकारिता का इतिहास अधूरा ही माना जायेगा. विगत ४२ वर्षो में इसने एक सार्थक भूमिका निभाते हुए जीन्द का नाम देश भर में रोशन किया है. ये शब्द प्रख्यात साहित्यकार डॉ. रामनिवास मानव ने वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ. केवल कृष्ण पाठक के अमृत महोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहे. विशाल रल्हन ने अपने गीत से सभी का मन मोह लिया.

रवीन्द्र ज्योति साहित्य मंच, जीन्द तथा हरियाणा साहित्य-अकादमी, पंचकूला के सयुंक्त तत्वाधान में स्थानीय सागर होटल के सभागार में आयोजित एक भव्य राष्ट्रीय समारोह में बोलते हुए डॉ. मानव ने कहा कि पाठक जी की साहित्य-साधना एवं पत्रकारिता की सेवा अनुकरणीय है.

समारोह के अध्यक्ष डॉ. ए.के.चावला, पूर्व कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने डॉ. पाठक के साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें जीन्द का गौरव बताते हुए उन्हें सम्मान का सच्चा अधिकारी बताया. उन्होंने कहा कि हरियाणा की पत्रिकाओं को डॉ. पाठक से प्रेरणा लेकर साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय योगदान देना चाहिए. मंच के महासचिव श्री हरबंस निर्मोही के कुशल संचालन में सम्पन्न हुए इस समारोह में देश की एक दर्जन प्रमुख संस्थाओं द्वारा डॉ. पाठक का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया. इस अवसर पर श्री रामफल सिंह खटकड़ द्वारा सम्पादित डॉ केवल कृष्ण पाठकः व्यक्तित्व-कृतित्व ग्रंथ का विमोचन भी किया गया. उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर डॉ. सुभाष रस्तोगी, डॉ. लीलाधर वियोगी, डॉ. मदन लाल वर्मा, डॉ. रमाकांत शर्मा, विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी, श्री लाल बिहारी लाल, डॉ. शिवनाथ राय, सहित एक दर्जन से अधिक वरिष्ठ साहित्यकारों को स्मृति चिन्ह भेंट कर 'रवीन्द्र ज्योति साहित्य गौरव सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया. समारोह में नगर के सभी प्रमुख साहित्यकारों, पत्रकारों तथा गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही.

अब तक हमने बुरे कार्य किए है, इससे हमारा सुधार नहीं हो सकता, ऐसा सोचना अपने को धोखा देना है, जीवन के अन्तिम क्षण तक मनुश्य को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए. दाउजी

कविताएं

मित्र की उदारता

अपने मित्र की खातिरदारी देखकर
मेरी आंख भर आई
जब उसने मुझे
प्याज की भजिया बनाकर खिलाई,
साथ ही
लहसुन की चटनी भी सुंघाई.
मुझे मेरे सोचने का मिल गया दंड
पांच किलो प्याज था मित्र के घर में
पर न था कोई घमंड.
हां उनकी पत्नी का चेहरा गर्व से जरूर दमक रहा था
अरे क्यों न हो उनके किचन में
तीन सौ ग्राम लहसुन जो चमक रहा था.
अंत में
सोंफ की जगह
लहसुन की पुती आगे करते हुए बोलीं
भाई साहब यह भी खाइए
दो चार उठाइए
यह कहते हुए
जैसे उन्होंने अपनी गर्दन घुमाई
मैनें
चार पुती उठा कर जेब में छिपाई
मित्रों तब से आज तक
मैं सुबह षाम लहसुन का मजा उठा रहा हूं.
षीषी में बंद लहसून रखा है
उसी को देख कर काम चला रहा हूं
रात भर सो नहीं पाता हूं
लहसुन की निगरानी में
रात भर जागता हूं
आजकल मैं अपने को
बहुत गर्वित महसूस करता हूं
मेरे घर में सौ ग्राम प्याज है
चार पुती लहसुन बड़े षान से कहता हूं
तो मित्रों
गर
प्याज लहसुन कैसा होता है
यही देखना है तो आप
मेरे घर आ सकते
देखकर तसल्ली पा सकते हैं
लेकिन हां
खाली हाथ मत आइएगा
साथ में
कुछ उपहार जरूर लाइएगा.

✍विपुल लखनवी, मुम्बई

गीत

आतंकी बर्दास्त नहीं है मुझको हिन्दुस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।।
उठो जवानों भारत माता फिर से तुम्हें पुकार रही
मार गिराओं लश्कर तइबा अब न शान्ति करार रही
इन्हें शौर्य दिखलाना होगा भारत कितना बलशाली है
सीमा की रखवाली करती सेना भारत वाली है।।
भून के रख दो आतंकी सब अपने हिन्दुस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।
दुनिया से आतंकवाद को दफनाकर ही दम लेना
क्षमादान देना न उसको अफजल को फांसी देना
करे हिमायत जो भी उसकी उसको देश निकाला दो
तनिक एकता खण्डित हो तो बम का उसे निवाला दो।।
पग न पड़ने पाये उसका मेरे हिन्दुस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।
आतंकवाद मिटाने को तो नया विधान बनाना होगा
हमें मुम्बई को फिर यारों दूल्हन सा सजाना होगा
एक राज्य की बात नहीं है पूरा भारत इक हो जाओ
उठा लो फिर हथियार जवानों चप्पे-चप्पे पर डट जाओ।।
सेना भेजो आग लगा दो झूठे पाकिस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।
क्यों कर आतंकवाद हो रहा कैसे बचे अहमदाबाद
जाओ घुस जाओ उसके घर बचे न अब इस्लामाबाद
पाक से आतंकी आयें तो उड़ा दो पूरा पाकिस्तान
गाड़ दो झंडा रावलपिन्डी जय जय बोलो हिन्दुस्तान।
भारतमाता की जय बोलो पूरे पाकिस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।।
आतंकी बर्दास्त नहीं है मुझको हिन्दुस्तान में।
नाको चना चबाना होगा पाक को हिन्दुस्तान में।।

✍**डॉ. संगल लाल त्रिपाठी 'भंवर'**, प्रतापगढ़, उ.प्र.

हम निशिदिन कर्म चक्र में घूमते रहते हैं, कभी नहीं थकते, एक लक्ष्य शेष, दूसरे लक्ष्य की ओर दौड़ते फिरते हैं, यदि ऐसा न होता तो हम निश्क्रिय होते.

++++++++++++++++++++++++

भटका राही राह पर आ जाता है, वह कभी राह पर न आ पाता यदि उसे राह पाने की आशा न होती. **दाउजी**

कहानी महिला रचनाकार

अनूठा अभियान

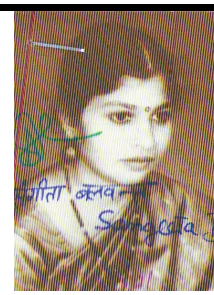

✍श्रीमती संगीता बलवन्त, गाजीपुर,

राजकिशोर बी.ए. पास था. नौकरी नहीं मिली तो बाप-दादाओं की तरह खेती-बारी में लग गया. खेती के कामों से फुर्सत मिलते ही वह अखबार लेकर बैठ जाता. अखबार के प्रत्येक पृष्ठ की प्रत्येक लाइन वह पढ़ जाता.

जब वह अखबार पढ़ता तो महसूस करता कि कोई खेल जगत में नाम कमा रहा है, कोई फिल्म जगत में, कोई साहित्य में तो कोई राजनीति में तो कोई अजब-गजब करतब करके ही सुर्खियों में हैं.

राजकिशोर के मन में भी ये इच्छा हुई कि उसका नाम भी अखबार में आये और लोग पढ़कर चर्चा करें.

रात में सोते समय एक ऐसा विचार उसके मन में आया जिसके लिए वो सुबह का बेसब्री से इंतजार करने लगा.

सुबह उठते ही वह नहा-धोकर दुकान से दो चार्ट पेपर खरीद लाया. उस पर भारत मां की तस्वीर बनाया और मोटे अक्षरों में लिखा -'मंहगाई, बेरोजगारी, दहेज, प्रदूषण, रिश्वत, गरीबी, आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार आदि से भारत मां को मुक्त करों.'

एक पोस्टर अपने पेट पर बाधा और दूसरा अपनी पीठ पर बाधा और साइकिल पर बैठकर घंटी बजाता हुआ निकल पड़ा गांव से शहर की ओर. जो भी उसे देखता कुछ समय के लिए रुककर देखने लगता और कुछ सोचने को मजबूर हो जाता. कुछ लोग उसे रोक कर समाज में नेक संदेश फैलाने के लिए सराहना भी करते. तभी अचानक राजकिशोर की आंखो में चमक आ गई क्योंकि सौभाग्य से एक प्रेस रिर्पोटर सामने से आता हुआ दिखा. उसकी नजर राजकिशोर पर पड़ी और वह रुक गया. राजकिशोर की फोटो खीचा, उसका परिचय लिया और उसके अनूठे अभियान के बारे में पूछा.

दूसरे दिन सुबह-सुबह अखबार आते ही वह उसमें स्वयं को ढूढने लगा, तभी उसकी नजर अपनी प्रकाशित फोटो और सम्बंधित हेंडिग पर पड़ी लिखा था, 'निकल पड़ा राजकिशोर समाज सेवा की ओर' राजकिशोर खुद को पेपर में देखकर खुशी से उछल पड़ा. आखिर अखबार में नाम छपवाने की उसकी दिली तमन्ना जो पूरी हो गई थी.

आज वह गांव में चर्चा का विषय बन गया. उसके काम की तारीफ जो मिलता वो करता. स्कूल के हेड मास्टर ने तो यहां तक कह डाला इस जमाने में आप जैसे लोग बहुत कम मिलते हैं जो अपने देश और समाज के बारे में सोचें और उसके लिए समय निकालें. ' हेड मास्टर की बातें राजकिशोर के दिल को छू गई.

राजकिशोर दूसरे दिन भी अपने अनूठे अभियान पर निकल पड़ा और उसका यह क्रम रोज जारी रहा. कभी किसी गांव में तो कभी किसी शहर में. हां, अब वह अखबार की सुर्खियों में आने के लिए यह काम नहीं करता बल्कि यह सोचकर करता कि लोगों में चुटकी भर भी देश में फैली कुरीतियों के प्रति परिवर्तन आ जाय तो वह अपने जीवन को और इस अनूठे अभियान को सार्थक समझेगा.

बूंद से सरिता बने दिव्य पुरस्कारः

भोपाल, 'दिव्य पुरस्कारों का शुभारंभ एक बूंद से हुआ था, जिसने आज सरिता का रूप ले लिया है. सैकड़ों रचनाकारों की कृतियों का मूल्यांकन कर उन्हें प्रोत्साहन देने का उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं जगदीश किंजल्क. ' उक्त बातें त्रिपूरा के पूर्व राज्यपाल पद्यमश्री ओ.एन. श्रीवास्तव ने १३वें दिव्य पुरस्कार समारोह में अध्यक्ष के रूप में कहीं. मुख्य अतिथि के रुप में बोलते हुए प्रसिद्ध कवि एवं चित्रकार श्री राजेन्द्र नागदेव ने कहा, 'दिव्य जी जैसे महान व्यक्तित्व के नाम पर, निष्पक्ष और ईमानदारी के साथ दिये जाने वाले ये पुरस्कार साहित्य जगत में विशिष्ट हैं.' समारोह में श्री शंभूदत्त सती, डॉ. नताशा अरोड़ा, किशन तिवारी, डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, अमृतलाल मदान, अनुज खरे एवं डॉ. राज गोस्वामी को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, की काव्य पुस्तक 'जग में मेरे होने पर', डॉ. नताशा अरोड़ा के उपन्यास 'युगान्तर' एवं श्रीमती खरे की पुस्तक 'लालन अब भोर भये' का लोकार्पण किया गया. समारोह का संचालन युवा लेखक श्री आशीष दशोत्तर ने किया. श्री मताचरण मिश्र ने आभार व्यक्त किया. कार्यक्रम में नगर के वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार एवं अधिकारी उपस्थित रहें

डॉ. दर्द को पूर्णिमा पूनम सम्मान

साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था कादम्बरी द्वारा झांसी के कवि एवं साहित्यकार डॉ. ओम प्रकाश हयारण दर्द को उनके कहानी संग्रह 'सच का आईना' के लिए स्व. पूर्णिमा पूनम सम्मान, जिसमें ११००/-रुपये नगद, उपाधि पत्र, अंग वस्त्रम, व साहित्य संस्था के अध्यक्ष डॉ. रत्नाकर पाण्डेय कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया.

स्व हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के १०१वें जन्म दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

नई दिल्ली. 'पवन चौधरी सोचता बहुत है. आदमी जितना सोचता है उतना ही दुःखी रहता है. चौधरी भी दुःखी आत्मा है. वह सोचता है न्यायपालिका है पर न्याय क्यों नहीं? गवर्नमेंट है पर गवरनेन्स क्यों नहीं? पब्लिक सर्वेट है पर वह हाकम क्यों है? वह दुःखी है, पर शुक्र है कि वह दुःखी है. अगर दुःखी ना होता तो कलम कभी ना उठाता. चुपचाप मजे से जीता.' उक्त उदगार न्यायमूर्ति जसपाल सिंह ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, संपादक स्व. हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के १०१वें जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा आफिसर्स क्लब, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में कहीं.

सरस्वती वंदना से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में अतिथियो का स्वागत विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी ने किया. तदोपरान्त मंचासीन अतिथियों को अंगवस्त्रम प्रदान कर अभिवादन किया गया. अभिवादन के बाद विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी जी विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित एक वकील साहित्यकार की डायरी के १६ खंडों में से तीन निबन्ध विधा की 'हरियाणा हिन्दी साहित्य एवं विहंगम दृष्टिपात', संस्मरण 'मेरे गीत तेरे गीत' व 'तेरे गीत मेरे मीत' का विमोचन किया गया. मनमौजी जी पुस्तकों पर अपने विचार रखते हुए बतौर प्रकाशक डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी ने कहा-'कृतियां तो बहुत आती हैं. लेकिन जो बात 'एक वकील साहित्यकार की डायरी' में हैं वह किसी अन्य में नहीं. किताब को पढ़ने वाला प्रत्येक प्रबुद्ध पाठक यह मानने को मजबूर हो जाएगा, कि वास्तव में आज भी लेखनी में दम हैं. आज ज्यादातर समीक्षाएं लेखक को खुश करने के लिए लिखी जाती है लेकिन 'मनमौजी' जी ने अपने खास लोगों की पुस्तकों पर लिखी समीक्षाओं में भी उसके दोनों पहलुओं पर गौर किया है. जहां उसकी अच्छाईयों की प्रशंसा की है, कमियों को भी बखूबी उजागर किया है. मनमौजी जी ने व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलन्द करने में भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है. अगर मनमौजी जी किसी से शिकायत भी की है तो ऐसे लाजबाब शब्दों के मकड़जाल से की मत पूछिए, पूरी तरह धो भी डाला है और अगले को धुलने की खबर तक नहीं.'

विशिष्ट अतिथि श्रीमती मंजू गोयल ने कहा 'मनमौजी जी जो भी लिखते हैं सिन्सरियली लिखते है, दृढ़ता के साथ लिखते है.' अपने संबधों की चर्चा करते हुए श्रीमती गोयल ने कहा-'यद्यपि मैं लेखक नहीं हूं, फिर भी मनमौजी जी की पुस्तको को, रचनाओं को अक्सर पढ़ती रहती हूं. इनकी रचनाए एक न्यायाधीश की तरह बोलती हैं.'

विशिष्ट अतिथि के रुप में ही पधारे जिला जल नवल किशोर शर्मा ने मनमौजी जी को लोकार्पण के अवसर पत्र-पुष्पम् भेंट करते हुए कहा-'एक साहित्यकार को न्यायाधीश की तरह लिखना और बोलना चाहिए जिसकी बानगी मनमौजी में पर्याप्त रुप से मिलती है.'

विशिष्ट अतिथि के रुप पधारे राष्ट्रीय विश्वास के प्रधान संपादक विजय मोहन ने कहा-'मनमौजी जी तो हमारे पिताजी के अच्छे साथी रहे हैं. आपकी रचनाओं की तेजधार देखकर ही हमने आपका स्तम्भ शुरु किया था. मनमौजी का एक पृष्ठीय यह स्तम्भ पाठकों को बहुत पसंद आता है.'

इस अवसर पर डॉ. राणा प्रताप सिंह 'गणगौरी ने अपनी शेरों-शायरी के माध्यम से अज्ञेय जी को अपनी श्रद्धांजलि दी तथा मनमौजी जी को बधाई दी.

मैं लहरो से लड़ते-२ डूब गया तो क्या ग़म है
क्यों रोते है नदी किनारे बैठे लोग।।

पवन चौधरी ने कहा-'मैंने जिंदगी में ठोकरें खायी कम हैं, मारी अधिक हैं. हर ठोकर ने मुझे आगे बढ़ाया है, चाहे ठोकर उनकी थी, चाहे ठोकर मेरी थी. आज के परिवेश में अधिकांश लेखक या तो शिक्षक हैं या कहीं न कहीं सरकार के पाले में बंधे हुए बैल की तरह हैं.'

कार्यक्रम के अंत में अज्ञेय जी के १०१वें जन्म दिवस को मनाने के लिए दो भव्य केक अतिथियों के द्वारा काटे गये. जिसकी भव्यता को लोगों ने काफी सराहा.

कार्यक्रम इतना भव्य था कि नई दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व हरियाणा से पधारे साहित्यकारों ने इसे अपनी तरह का अनोखा कार्यक्रम बताया. इस आयोजन की भव्यता का अंदाजा इस बात से बखूबी लगाया जा सकता है कि दिल्ली दूरदर्शन ने इस पूरे कार्यक्रम की रिकार्डिंग की. पूरे साढ़े तीन घंटे दूरदर्शन की यूनिट वहीं टिकी रही. जब तक कि कार्यक्रम समाप्त नहीं हो गया.

इस अवसर पर सतपाल मलहोत्रा, ममता चौधरी सहित अनेक स्थानीय तथा अन्य प्रदेशों से पधारे साहित्यकार उपस्थित थें.

आयुर्वेद से पर्यावरण एवं मानव सुरक्षित

चन्दौसी। श्री राममोहन सेवा आश्रम के तत्वाधान में पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय के सहयोग से पर्यावरण जागरूकता शिविर का आयोजन अवकाश प्राप्त प्रवक्ता श्री विद्यासागर गुप्त की अध्यक्षता में १३ मार्च २०११ को सम्पन्न हुआ.

कार्यक्रम का प्रारम्भ कानपुर के डॉ० प्रदीप पाण्डेय सम्पादक मेडिकल सन्देश द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चन्दौसी के वरिष्ठ समाजसेवी श्री पुरूषोत्तम दास टण्डन तथा विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री वीरेन्द्र नाथ गुप्त को बनाया गया। श्री ब्रजेश कुमार सिंह पोस्ट मास्टर नरौली ने जैविक खाद को पर्यावरण की रक्षा का सवोत्तम उपाय बताया. नगर के प्रमुख समाजसेवी श्री सुधीर महरोत्रा ने संस्था द्वारा प्रकाशित स्मारिका पर्यावरणीय समस्याएं और उनका निदान (प्रथम पुष्प) का विमोचन किया.

डॉ० हरीओम शर्मा ने कहा-हमारा शरीर प्राकृतिक रूप से पाँच तत्वों से बना है। जैसे पृथ्वी, अग्नि, जल, वायू, आकाश जो ईश्वर की कृपा से ही निर्मित होता है। मनुष्य यदि इन तत्वों का सन्तुलन रखें तो स्वस्थ्य रहने का कोई कारण ही नहीं है।

उत्तराखण्ड के सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ० पीताम्बर अवस्थी ने कहा-'स्कूलों में जाकर बच्चों को पालीथीन के प्रयोग से दूर रहने को कहते है। पर्यावरण के सुधार हेतु आवश्यक कार्यावाही होनी चाहियें पिघलते ग्लेशियर आने वाली विपदाओं का सकेत है.

न्यूज आफ जैनरेशन एक्स के प्रधान सम्पादक श्री मोहित शर्मा ने गुटखा पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की प्रशंसा की. संस्कार भारती के प्रधान श्री राजीव लोचन शर्मा ने पर्यावरण सुरक्षा को

पर्यावरण जागरूकता शिविर में विभिन्न क्षेत्रों के पर्यावरणविदों ने भाग लिया

मनुष्य जीवन की प्रथम आवश्यकता बताया। वैद्य ब्रजनन्दन शर्मा ने आयुवेद का पर्यावरण से धनिष्ठ सम्बन्ध बताते हुये कहा कि यदि वेद के नियमों का पालन किया जाय तो मनुष्य के रोगी होने के प्रश्न ही नही है।

इस अवसर पर डॉ० हरीओम शर्मा, डॉ० तिलक राज महोरात्रा, श्री ब्रजेश कुमार सिंह, पिताम्बर आवंथी, डॉ राजेश चन्द्, डॉ० अमरेन्द्र सिंह सेगर, डॉ० हरेश चन्द्र सरोज, वैद्य मुरारी प्रसाद लोदी, डॉ० सी०एल० पाल, मोहित कुमार सौगल, डॉ० प्रमोद वर्मा, एन० रावत, वैद्य विनय प्रकाश श्रीवातव, डॉ० प्रदीप कुमार पाण्डेय आदि पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संस्था ने एक पर्यावरण साहित्य प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। देश के विभिन्न भागों से आये आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर के तहत स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। जिसमें योगी फार्मेसी लखनऊ के आयुवैदिक औषधीयाँ प्रदर्शित की गयी तथा वीरेन्द्र नाथ गुप्त मुरादाबाद की पुस्तके वितरित की गयी।

कार्यक्रम में अभिषेक शर्मा, श्री कृष्ण गोपाल वार्ष्णेय, विश्व विजय, सुभाष शर्मा, सचिन मग्गों, नीरज शर्मा, आराम सिंह की सक्रीय भागीदारी रही तथा श्रीमती मधु वार्ष्णेय, पुनीत गोयल, डॉ० वीरेन्द्र मिश्र, श्री विजय दिव्य, डॉ० महदी हसन, कैलाश चन्द्र, `संजीव कुमार चौहान, विनय कुमार शर्मा, अजय कुमार चौहान, चन्द्र प्रकाश शर्मा, रामवीर सिंह, एस०के० सक्सेना, कुमार शुभम कृष्णगोपाल मंगलम् अशोक कुमार मिश्र, निजामउद्दीन, अमित कुमार, राम किशोर मिश्र शशि वाला कु० श्रुति, श्रीमती राधा अग्रवाल आदि अनेक नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

प्रिय का वियोग, वस्तु की हानि, हमें असह्य होती; यदि पुनः मिलन की आषा न होती, तब यह जीवन नीरस होकर कटुता पैदा कर देता. दाउजी

पाठकों की पाती

वर्ष २०११ की शुभकामना

छल-छद्म-दंभ-द्वेश मिट जाए हिय क्लेश,
प्रगति के पथ पर आप बढ़ते रहें।
विघ्न-व्याधि अवसाद आए नहीं कभी पास,
यश के शिखर पर सतत् चढ़ते रहें।
सत्य रथी दृढ़ व्रती दुविधा न रहे मति,
धरम के साथ सारे काम करते रहें।
सुख-शांति आयु बल बुद्धि औ समृद्धि बढ़े,
नूतन बरस में बहार लूटते रहें।

✍**अजय चतुर्वेदी 'कक्का'**, सोनभद्र

++++++++++++++++++++++

प्रिय श्री द्विवेदी जी

आपके जुझारु एवं ऊर्जस्वी संपादन में प्रकाशित 'विश्व स्नेह समाज' का 'पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक' के रुप में प्राप्त हुआ. एतदर्थ आभार. हिन्दी जगत में पत्रकारिता का समूचा परिदृश्य इस विशेषांक के माध्यम से पाठकों के समक्ष उपस्थित हो गया है. हिन्दी में धार्मिक पत्रकारिता तथा स्वातत्रयोत्तर हिन्दी की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता जैसे अछूते विषयों पर लेख प्रकाशित कर आपने पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए संदर्भ सामग्री सहज ही उपलब्ध करा दी है. इसके लिए आप विशेष बधाई के पात्र हैं. 'संवाद समितियां और उनके कार्य' तथा 'यूं निकलता है समाचार पत्र' जैसे लेख भी उपयोगी है. यह समूचा विशेषांक संग्रहणीय एवं सराहनीय है. उपयोगी सामग्री के चयन, संकलन एवं संपादन में आपका श्रम सार्थक एवं अनुकरणीय हैं. यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से इलाहाबाद में साहित्य मेला जैसे अभिनव प्रकल्प का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं. हमारी मंगल कामनाएं आपके साथ हैं. नवोदित एवं युवा रचनाकारों की पत्रिका एवं अन्य साहित्यिक आयोजनों के माध यम से उन्हें सशक्त मंच उपलब्ध कराकर आप बड़े पुण्य का कार्य कर रहे हैं. साहित्य की सुरसरि आप जैसे कर्मठ एवं समर्पित आयोजकों के अंशदान से ही प्रवाहमान है.

हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं.

✍**डॉ. हरि सिंह पाल**,
६८४, इन्द्रा पार्क, नई दिल्ली-४५

++++++++++++++++++++++

प्रिय गोकुलेश्वर जी नमस्कार!

पत्रिका का जुलाई अंक मिला. आभार. आपकी बहुमुखी प्रतिभा के परिचित होने का सुअवसर मिला. आप समर्पित भाव से हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा कर रहे हैं. इसी प्रकार सेवारत रहें.

पत्रिका सौभाग्यवश मिल गई क्योंकि इस पर मेरा पता अपूर्ण था. पत्रिका वं जनसंचार विशेषांक की रचनाएं महत्वपूर्ण हैं. उपयोगी हैं.

✍**अशोक लव**, संपादक, मोहयाल मित्र, ३६३, सूर्य अपार्टमेंट, सेक्टर-८, द्वारिका, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++++

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी

पत्रिका मिली. सम्पूर्ण अंक सोनभद्र की संस्कृति एवं पर्यटन पर केन्द्रित है किन्तु सभी पूर्व स्थायी स्तम्भों को भी यथावत रखें गये हैं.

'अपनी बात' में सम्पादक ने 'दीपक तले अंधेरे' को स्पष्ट करते हुए सोनभद्र का विकास न होने पर अपनी मर्मान्तक पीड़ा व्यक्त की है.

'प्रेरक प्रसंग', 'नारी दोहा शतक', 'तम्बाखू के खतरे', 'अज्ञेय और मनमौजी के संवाद, जिज्ञासा, आदि अच्छे लेख तथा कहानी है. कवर अच्छा है, कागज सादा और छपाई उत्तम है.

✍**भगवती प्रसाद देवपुरा**,
प्रधानमंत्री, साहित्य-मंडल, श्रीनाथद्वारा

डॉ० लाहा सम्मानित

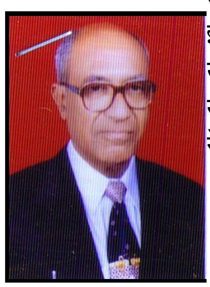

ग्वालियर के कवि/लेखक डॉ. नरेन्द्र नाथा लाहा आपकी पुस्तक 'मेरे पिताश्री जीवनी' के लिए 'अग्रवाल पुस्तक पुरस्कार आयडियल राष्ट्रीय स्पर्धा में सम्मानित किया गया. विदित हो कि डॉ. लाहा को सरिता लोकभारती संस्थारन, सुल्तानपुर, उ.प्र. द्वारा अभी हाल ही में 'साहित्य मार्तण्ड सम्मान' भी प्रदान किया गया हैं.

डॉ० लाहा पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

विमल जयंती पर कवि सम्मेलन

औरंगाबाद, बुलन्दशहर, लोकतंत्र सेनानी एवं कवि स्व. मदन गोपाल 'विमल' की ७६वीं जयती धूमधाम से मनायी गयी. इस अवसर पर एक कवि सम्मेलन व मुशायरे का आयोजन साहित्यकार राजेश गोयल के संयोजन में हुआ. इसकी अध्यक्षता सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने वी मुख्य अतिथि समाज सेवी जगवीर सिंह लोधी, अन्य अतिथियों में गाफिल स्वामी एवं अब्दुल्ला कुरैशी पूर्व चेयरमैन थे. संचालन महेश पंछी ने किया. गाफिल स्वामी ने

आपका मत चाहिए मतवाले है नेता।
कथनी करनी भिन्न मन के काले हैं नेता।।

मीर जाहीद अली ने-

आज पैगाम यहां से सुनाया जाये। भाई-भाई को अब और न लड़ाया जाये।

इसमें सरन मधुकरे, देवेन्द्र नागर, एम.पी.विमल, परमात्मा शरण शर्मा, राजपाल राज, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रहलाद सिंह बेकल, शाह आलम अमन, घायल औरगाबादी, मोर मुकुट रसिया, बांकेलाल, नितिन रस्तोगी, आदि ने रचना पाठ किया.

दलित-शोषण, पीड़ित गांवो और टूट्ते रिश्तों की कहानियां

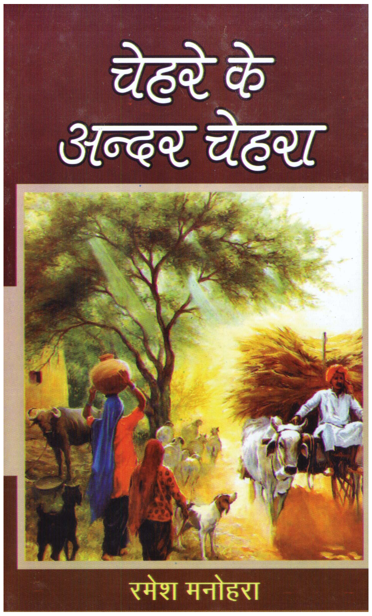

रमेश मनोहरा साहित्य जगत का एक सुपरिचित नाम हैं. रमेश मनोहर का चौथा कहानी संग्रह 'चेहरे के अन्दर चेहरा' हैं.

संग्रह की पहली कहानी आज की कसाईखाना हो चुकी व्यवस्था पर करारा प्रहार करती है. ऊँचे-ऊँचे शापिंग माल खड़े करने वाला मजदूर झोपड़ो में अभावों और उस पर शोषण की मार झेल रहा है. 'खतरे से सचेत' में आजकल बिजनेस में आपसी प्रतिस्पर्धा से बढ़कर दुश्मनी का रूप अख्तियार करने को प्रस्तुत किया है. अपनी पुश्तैनी जमीन, गॉव से जुदा होकर व्यक्ति अपने रिश्ते भी खोता जा रहा है. रिश्ता अब 'बदलते रिश्ते' हो गए हैं. 'बलि का बकरा', 'स्वाभिमान', कहानियां साम्प्रदायिक दंगो, नौकरशाही में पिसते स्वाभिमान को दर्शाती तो 'नंगा चेहरा', 'एक बार फिर हार' तथा 'इस रिश्ते को क्या नाम दूं' कहानियां रिश्वत-भ्रष्टाचार दलित शोषण और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को दर्शाती हैं.

कुल मिलाकर इस संग्रह की सभी कहानियां महिला अत्याचार, शोषण, दलित शोषण, सामंतवाद द्वारा दलित शोषण, गंदी राजनीति के दॉवपेच, महिला आरक्षण का दुरूपयोग, साम्प्रदायिक दंगो, भ्रष्टाचार-रिश्वत आदि को उजागर करती है. कहानी में कुछ स्थल ऐसे भी अए हैं जहां वाक्यों की समानता के प्रयोग के बार-बार दर्शन होते हैं. भाषा सरल, प्रवाहमय है. प्रचलित समान उक्तियों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है. ग्रामीण पृष्ठभूमि के पात्रों में सहज रूप से मालवी बोली का प्रयोग देखने को मिलता है जो पात्रों की मांग के हिसाब से ठीक हैं. सभी कहांनिया जिज्ञासा का संचार करती हुई आगे ले जाती है, अतः पठनीय हैं. अयन प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित, इस संग्रह का मूल्य रु० १६०/- है.

समीक्षकः मोहम्मद आरिफ़, उज्जैन

डॉ0 पाठक के सम्पूर्ण-व्यक्तित्व की झलक

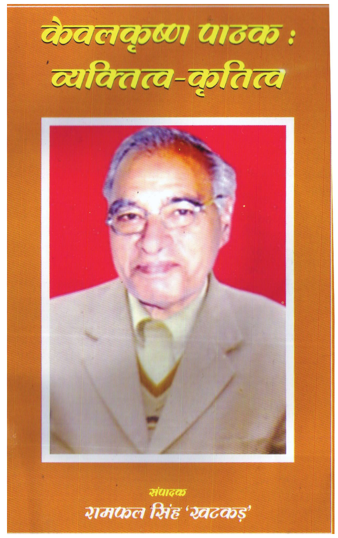

रवीन्द्र ज्योति रूपी नीड़ का निर्माण लगभग चार दशकों से परमार्थ हित-साहित्य-संचयन किया गया. उसके परिणामस्वरुप ही आज यह पुस्तक पाठकों को सम्मुख है. प्रस्तुत समीक्षा-ग्रंथ से डॉ० केवल कृष्ण पाठक जी के द्वारा रचित साहित्य का जो बीज प्रत्यक्ष रूप से बिंबित होता है वह लेखक के सम्पूर्ण-व्यक्तित्व की झलक दिखाता है. समीक्षा ग्रंथ आदि अध्यायों में विभाजित है-जीवन वृतांत, जीवन तेरे कितने रंग, समीक्षायान, मन की पीड़ा समीक्षायन, अप्रकाशित कृतियां, रवीन्द्र-ज्योति-अभिमत, पत्रावली, काव्यांजलि एवं चित्रावली.

रवीन्द्र ज्योति के सम्पादक होने के साथ-साथ, साहित्य के क्षेत्र में अनेक विद्वानों से जुड़े हुए, बहु-पक्षीय प्रतिभा के धनी डॉ. केवल कृष्ण पाठक की दीर्घ साधना का मूल्यांकन करने हेतु प्रस्तुत पुस्तक पर्याप्त नहीं है. प्रकाशित एवं अप्रकाशित कहानी संग्रह, लेख, निबन्ध, समीक्षा ग्रंथ संग्रह आदि का नामांकन, ही लेखक की संवेदना, आस्था, कर्मनिष्ठा, मानवीय भावनाओं, मूल्यों एवं आदर्शो, सामाजिक कुरीतियों के अभिशाप, विषमता आदि को प्रकट करता है. बाह्य जगत के चित्रांगन के साथ अन्तः चेतना, सजगता, आध्यत्मिकता चिंतन एवं आध्यात्मिक-मूल्यों के रक्षक, डॉ. केवल कृष्ण पाठक एक कुशल लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, सांस्कृतिक पत्रकारिता के नेतृत्वकर्ता, अनेक साहित्य-समर्पित-पत्रिकाओं, संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्ता, अधिकारी एक सम्मानित-विभूति डॉ. पाठक सरस्वती-साधना में अग्रसर रहें, यह मेरी हार्दिक कामना हैं.

प्रत्येक अध्याय से पूर्व सम्पादक रामफल सिंह खटकड़ जी द्वारा दिए काव्यात्मक विचार, लेखक के प्रति उनके मनोभावों को प्रकट करने का अत्यंत हृदयस्पर्शी प्रयास है.

पुस्तक का नामः केवल कृष्ण पाठकः व्यक्तित्व-कृतित्व
सम्पादकः रामफल सिंह खटकड़ा
प्रकाशकः रवीन्द्र ज्योति साहित्य मंच, ३४३-१६, आनंद निवास, गीता कॉलोनी, जीन्द-१२६१०२, हरियाणा
पृष्ठः १२८ **मूल्य** : रु० २००/-

सजल मधु

सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल, हरियाणा से प्रकाशित सजल मधु काव्य संग्रह रचनाकार महावीर प्रसाद मुकेश का १०४ पृष्ठीय संग्रह हैं. ऐ कवि-कल्पना से शुरु हुआ -बन कर/ सत्पथ-प्रेरिका /नवराष्ट्र की सेविका, ऐ अद्भुत कवि -कल्पना।

तीसरी रचना चाहिए में मां सरस्वती की वंदना नये रंग-रुप में कवि ने किया है-ऐ वाणी मां, दया दोहरी मुझ पर कर दो, ज्ञान-गान का सुन्दर मिश्रण मुझ में भर दो।

किससे सीखूं?-मधुर रसाल/रसाल बनाना किससे सिखूं?/उचित स्नेह तो है पर, अब इस शान्त ज्वाल को/हाय जगाना किससे सीखूं?

सहित 'बहिर्मुखी अन्तर्मुखी, पथ और, एकाकी पथिक आदि रचनाएं अच्छी बन पड़ी हैं. रचनाकार को बधई.

यथार्थ

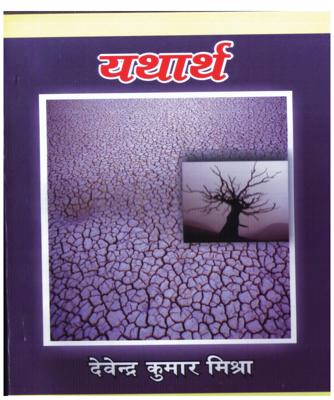

देवेन्द्र कुमार मिश्रा एक ऐसी युवा साहित्यकार है जिनकी कृतियां अक्सर आती ही रहती है. आपका साहित्य से बहुत गहरा अनुराग हैं. इतनी कम उम्र में जितना लिख पढ़ लिए हैं उतना सामान्यतः देखने-सुनने को नहीं मिलता.साधारणतः देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं खूब छपते भी रहते हैं. हमारे पास भी पर्याप्त मात्रा में आपकी रचनाएं आती हैं. प्रत्येक वर्ष आपकी कोई न कोई कृति छप ही जाती है. यह लेखन के प्रति गहरा अनुराग ही सिद्ध करता है. प्रस्तुत काव्य संग्रह यथार्थ, जिसे श्री विष्णु प्रकाशन, छिन्दवाड़ा ने प्रकाशित किया है, इसका मूल्य १००/-रुपये मात्र है. वैसे मैंने देवेन्द्र कमार मिश्र की कई किताबों की समीक्षाएं लिखी है, सभी किताबों में सामाजिक ताने-बाने में बड़े ही खूबसूरत अंदाज पेश करते हैं. प्रस्तुत काव्य संग्रह भी सामाजिक ताने-बाने को लेकर बुना गया हैं. १०० पृष्ठीय इस संकलन में सौ रचनाएं भी समाहित है. बानगी के तौर पर पहली ही रचना देखिए- 'नालायक' बाजार भाव/पता है/मन के भाव/लापता है/इसी भाव से/बेटियां कोख में/मार डाली/अब बहू खरीदने/निकले हैं बाजार / नालायकों/बाजार में रंडियां/बिकती है/बहुएं और बेटियां/ तो घर में ही/ मिलती है/ उन्हें खरीदा नहीं जाता/लाया जाता है।

इसके अतिरिक्त क्या काम, झूठों की घनिष्ठता 'सच हमसे/बर्दाश्त नहीं होता/हमें झूठ में जीने/की आदत है/सच मत बोल/पोल मत खोल/ झूठी बातों में/दिल बहलाइये/हमें अच्छा लगता है झूठ।

वरदान चुकाये नहीं जाते, हे कर्ण आदि अच्छी रचनाएं है. रचनाकार को बधाई

गीत गोविन्द का

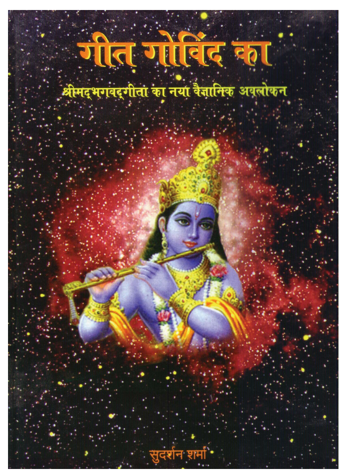

सुदर्शन शर्मा 'रथांग' मूल रुप से एक विज्ञान लेखक है. लेकिन एक विज्ञान लेखक व वैज्ञानिक होते हुए भी उन्होंने आध्यात्म पर अपनी लेखनी 'गीत गोविंद का' में एक वैज्ञानिक दृष्टि से अवलोकन कर चलायी है. इसे गीता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा. दिवंगत श्री विट्ठलराव गणेश जोशी जी को समर्पित प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने श्रीमद् भगवद्गीता के १८ अध्यायों के ७०० संस्कृत श्लोकों का शब्दार्थ एवं भावार्थ विवचेन उदाहरण सहित किया है. प्रत्येक अध्याय के पूर्व उसकी भूमिका स्पष्ट की गयी है. आम जन को गीता का अर्थ बोध कराने के लिए दैनिक जीवन के अनेक प्रसंग भी अंकित किये गये हैं. लेखक का प्रयास बहुत ही सुन्दर, सरल, सरस व सराहनीय है.

प्रकाशकः १०४, अदिति, अपना घर युनिट ५, श्री स्वामी समर्थ नगर, अंधेरी पश्चिम, मुंबइ-४०००५३,
मूल्यः १२५/-रुपये मात्र